केरल पाठावली Kerala Reader

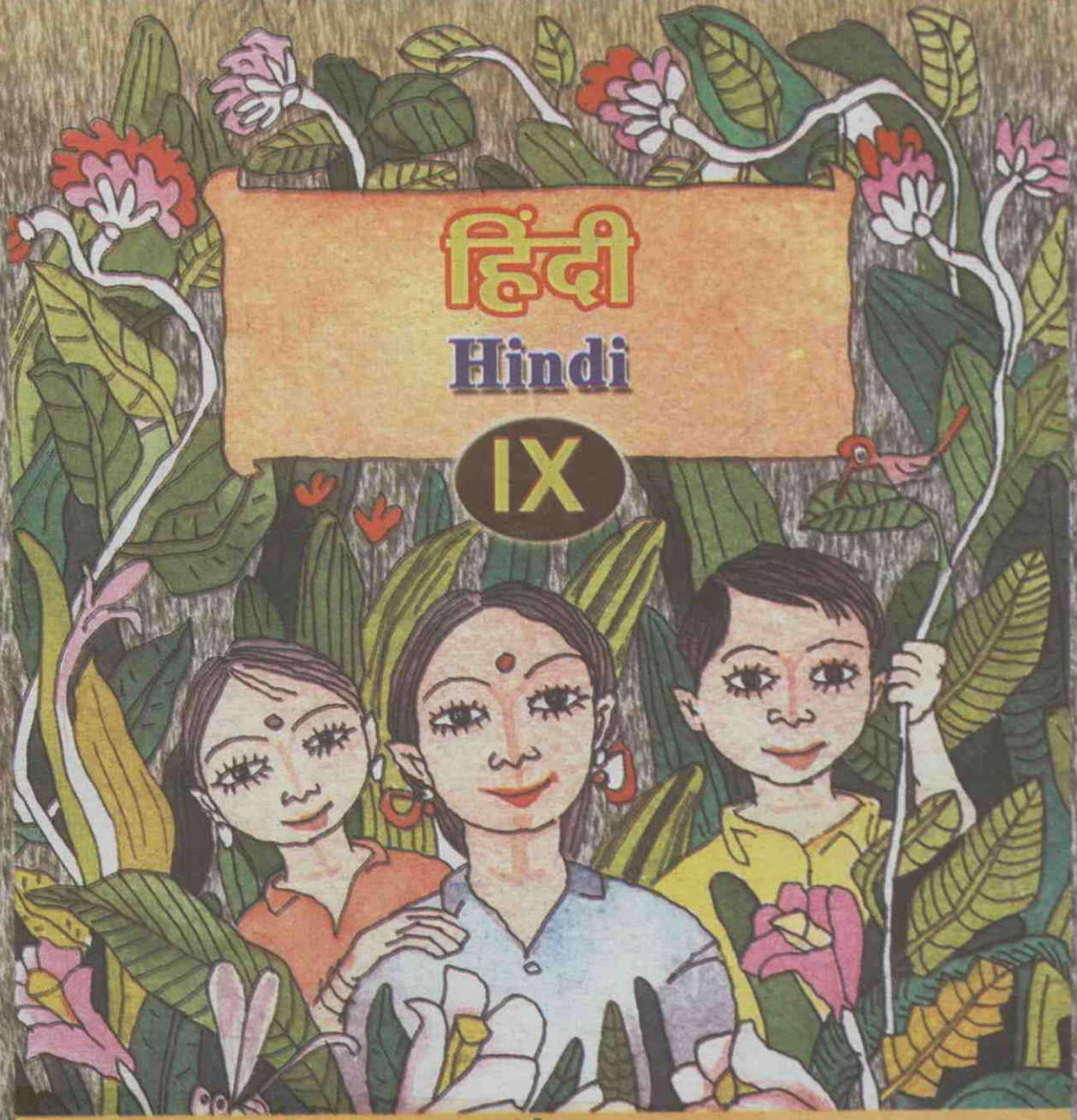

हिंदी
Hindi
IX

TB/IX/2016/400(H)

केरल सरकार
शिक्षा विभाग

भारत का संविधान

भाग 4 क

नागरिकों का मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य -

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे/बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

TB/IX/2016/400 (H)

हिंदी

कक्षा IX

केरल सरकार
शिक्षा विभाग

2016

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

KT 39-1/Hindi - 9

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of Education, Government of Kerala

प्यारे बच्चो,

संसार की सबसे बड़ी तीसरी भाषा होने का गौरव हिंदी भाषा को प्राप्त है। इसकी जानकारी हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। नवीं कक्षा की हिंदी की नई किताब आपके हाथों में है। इसमें आपकी रुचि के अनुसार कहानी, कविता, संस्मरण, लेख आदि विधाओं को सम्मिलित किया गया है। इनका आस्वादन करें, कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय भाग लें और हिंदी के अध्ययन द्वारा देश की एकता में अपनी भूमिका निभाएँ।

शुभकामनाओं के साथ

डॉ.पी.ए. फ़ातिमा
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

HINDI

CLASS - IX

TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM

Mohamed Ashraf Alungal	Irimbiliyam Govt. HSS, Malappuram
Sreedharan Palayi	GHSS Peruvalloor, Malappuram
Bichu K L	GHSS Vettathur, Malappuram
Shanoj Kumar N K	GVHSS For Girls, Nadakkavu, Kozhikkode
Vahid K P	GHSS Pang, Malappuram
Dr. Sreeja J	GGHSS Cottonhill, Thiruvananthapuram
Thomas Mathew	St. Paul's HS, Nariyapuram, Pathanamthitta
Somarajan N V	GHSS Ayyankavu, Ernakulam
M Padmajan	RNMHSS, Narippatta, Kozhikkode

EXPERTS

Dr. S THANKAMONI AMMA
Former Prof. & Head, Department of Hindi, University of Kerala, Kariavattom, Thiruvananthapuram

Dr. N SURESH
Hon. Director, Centre for Translation & Translation Studies University of Kerala, Thiruvananthapuram

Dr. B ASOK
Head, Dept. of Hindi, Govt. Brennen College, Thalassery

ARTIST

BAIJUDEV
GHSS Kumarapuram, Palakkad

ACADEMIC CO-ORDINATOR

Dr. REKHA R NAIR
Research Officer, SCERT

अनुक्रम

इकाई 1

पुल बनी थी माँ	नरेंद्र पुंडरीक	कविता
टीवी	वरुण ग्रोवर	पटकथा
पक्षी और दीमक	मुक्तिबोध	कहानी
टीवी	वरुण ग्रोवर	कहानी

इकाई 2

जिस गली में मैं रहता हूँ...	मिर्ज़ा गालिब	डायरी
गांधीजी गांधीजी कैसे बने	स्वयं प्रकाश	लेख
जीने की कला	त्रिलोचन	कविता
फूलों का शो	शिल्पी टॉस्टॉविन	लेख

इकाई 3

नंगे पैर	वेंकटेश माडगुलकर	कहानी
छिप-छिप अश्रु बहानेवालो	गोपालदास नीरज	कविता
अंदर के और बाहर के	विंदा करंदीकर	व्यंग्य लेख

अनुक्रम

इकाई 4

अकाल में सारस	केदारनाथ सिंह	कविता
संसार पुस्तक है	जवाहरलाल नेहरू	पत्र
दौड़	आमोद कारखानिस	लेख

इकाई 5

प्रेमचंद घर में	शिवरानी देवी	संस्मरण
राग गौरी	सूरदास	पद
ओ मेरे पिता	एकांत श्रीवास्तव	कविता

इकाई 1

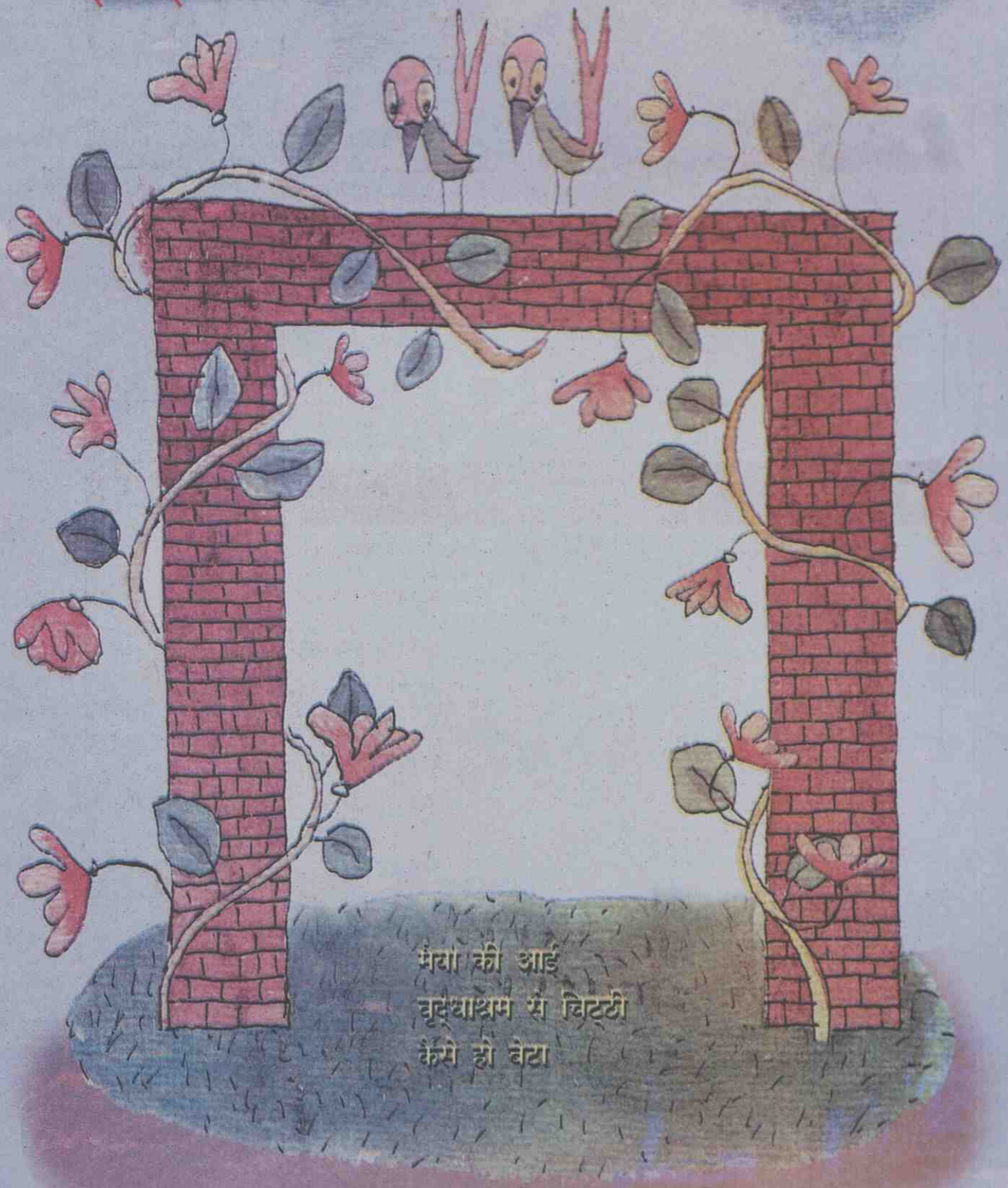

वर्गपहेली की पूर्ति करें।

			1		त्व	9
2 भा		चा				
	3		तं		8	ष्णु
			7	4	म	
						10
5 इ			स		र्दी	स्कृ
	6	क				

दाईं ओर...

1. समाज के हर सदस्य को इसका बोध होना चाहिए। (तीन अक्षर)
2. यह विशेषता मनुष्य को मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा देती है।
3. यह भारतीय शासन-व्यवस्था की विशेषता है।
4. यह एक विकसित समाज का निशान है।
5. समाज की प्रगति जानने के लिए इसकी जरूरत है। (चार अक्षर)
6. यह सामाजिक जीवन का आधार है।

नीचे की ओर...

4. यह व्यक्तियों का समूह है।
7. इसका फायदा हर क्षेत्र के लोगों को मिलना चाहिए। (तीन अक्षर)
8. समाज के सदस्यों के बीच यह भाव रहना चाहिए।
9. यह दूसरों के विचारों और भावनाओं को मानना है।
10. यह मानव-समाज की विरासत है।

मया की आई
वृद्धाश्रम से चिट्ठी
कैसे हो बेटा

• *वृद्धाश्रम में रहनेवाली माँ किसके बारे में सोचती है?*

कविता

पुल बनी थी माँ

नरेंद्र पुंडरीक

हम भाइयों के बीच
पुल बनी थी माँ
जिसमें आए दिन
दौड़ती रहती थी बेधड़क
बिना किसी हरी लाल बत्ती के
हम लोगों की छुक छुक छक छक

'पुल बनी थी माँ' से क्या तात्पर्य है?

पिता के बाद
हम भाइयों के बीच
पुल बनी माँ
अचानक नहीं टूटी
धीरे-धीरे टूटती रही
हम देखते रहे और
मानते रहे कि
बुढ़ा रही है माँ

'बुढ़ा रही है माँ' इसका आशय क्या है?

माँ के बार-बार कहने को
हम मानकर चलते रहे
उसके बूढ़े होने की आदत और
अपनी हर आवाज़ में
धीरे-धीरे टूटती रही माँ

हाथों हाथ रहती माँ
एक दिन हमारे कंधों में आ गई
धीरे-धीरे महसूस करने लगे हम
अपने वृषभ कंधों में
माँ का भारी होना

जब तक जीवित रही माँ
हम बदलते रहे अपने कंधे
माँ आखिर माँ ही तो है
बार-बार हमें कंधे बदलते देख
हमारे कंधों से उतर गई माँ
और माँ के कंधों से उतरते ही
उतर गए हमारे कंधे।

'माँ आखिर माँ ही तो है' इससे आपने क्या समझा?

- **लिखें, निम्न लिखित आशय कविता की किन-किन पंक्तियों में हैं?**
  - बेटों का जीवन बेरोकटोक चलती गाड़ी के समान रहा।
  - माँ की देख-भाल की ज़िम्मेदारी बेटों पर आ गई।
  - बेटे अपने दायित्व बदलते रहे।
  - माँ के चले जाने से बेटे बेसहारे बने।
- **कविता का परिचय देते हुए टिप्पणी लिखें।**

नरेंद्र पुंडरीक

15 जनवरी 1954 को उत्तर प्रदेश के बांदा में जन्म। समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवियों में से एक। आलोचना एवं संपादन के क्षेत्र में सक्रिय।

प्रमुख कविता संकलन : नंगे पाँव का रास्ता, सातों आकाशों की लाड़ली, इन्हें देखने दो इतनी-सी दुनिया, इस पृथ्वी की विराटता में।

पटकथा

वरुण ग्रोवर

टीवी का भी अपना इतिहास है...

टीवी

सीन 1

गोपू के घर के बाहर की कच्ची सड़क। दोपहर के दो बजे हैं।

(पहाड़ी इलाका। दूर-दूर तक फैले पहाड़ दिख रहे हैं। करीबन 8-10 साल की उम्र के तीन बच्चे– गोपू, चुन्नी और लल्लू कच्चे रास्ते पर खड़े हैं। गोपू देखने से ही बाकी दोनों पर हावी लगता है। वह ज़मीन पर झुका है और कुछ उठाने की कोशिश कर रहा है। उसके हाथ में मकोड़ा है।)

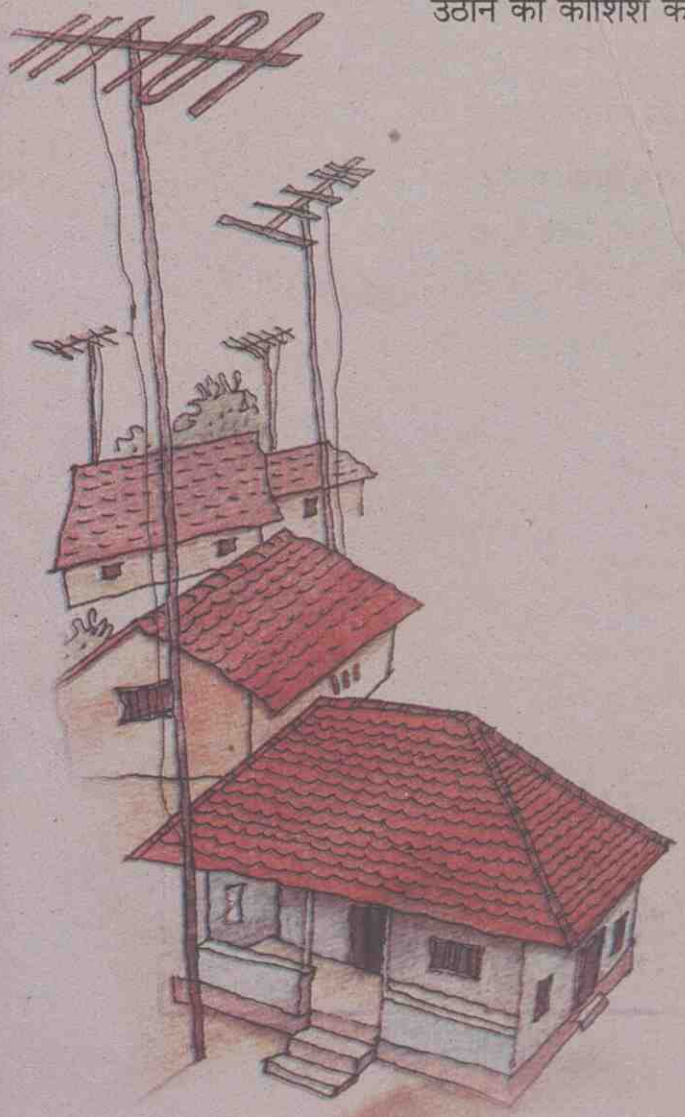

गोपू : (चुन्नी को मकोड़ा पकड़ाते हुए) ये ले... तेरा प्यारा मकोड़ा। अब खा इसकी कसम!

चुन्नी : (मुस्कुराकर मकोड़ा पकड़ते हुए) कैसे खानी है?

गोपू : अरे जैसे मास्टरजी बुलवाते हैं। बोल, "मैं कसम खाती हूँ..."

चुन्नी : मैं कसम खाती हूँ...

गोपू : कि हम चुपके से दूसरे गाँव जाएँगे...

चुन्नी : कि हम चुपके से दूसरे गाँव जाएँगे...

गोपू : और चुपके से टीवी देखकर आएँगे...

चुन्नी : (हँसी रोकते हुए) .... और चुपके से टीवी देखकर आएँगे...

गोपू : और यह बात किसीको नहीं बताएँगे। माँ को भी नहीं।

लल्लू : (बीच में टोककर) माँ को कैसे बताएँगे? माँ तो सो रही है।

गोपू : हाँ, माँ तो सो रही है। अब मकोड़ा रख दे।

(चुन्नी मकोड़ा रख देती है। हाथ झाड़ती है।)

गोपू : (आगे बढ़ते हुए) तो फिर चलो।

(तीनों बच्चे कच्ची सड़क पर आगे बढ़ जाते हैं।)

सीन 2

पहाड़ की पगडंडी। दोपहर के 3 बजे हैं।

(बच्चे मेहनत से पहाड़ की पगडंडी चढ़ रहे हैं। सामने वाली एक चोटी पर टीवी टॉवर दिख रहा है।)

गोपू : देखा? यही वो टॉवर है जिससे टीवी आता है।

लल्लू : आता कहाँ है? आता होता तो हम दूसरे गाँव क्यों जाते?

गोपू : चुन्नी, यह लल्लू एकदम लल्लू है ना? बाबा ने बताया था ना कि इसी टॉवर से दूसरे गाँव में टीवी आता है और क्योंकि हमारा गाँव पहाड़ के इस तरफ़ है, हमारे में नहीं आता है।

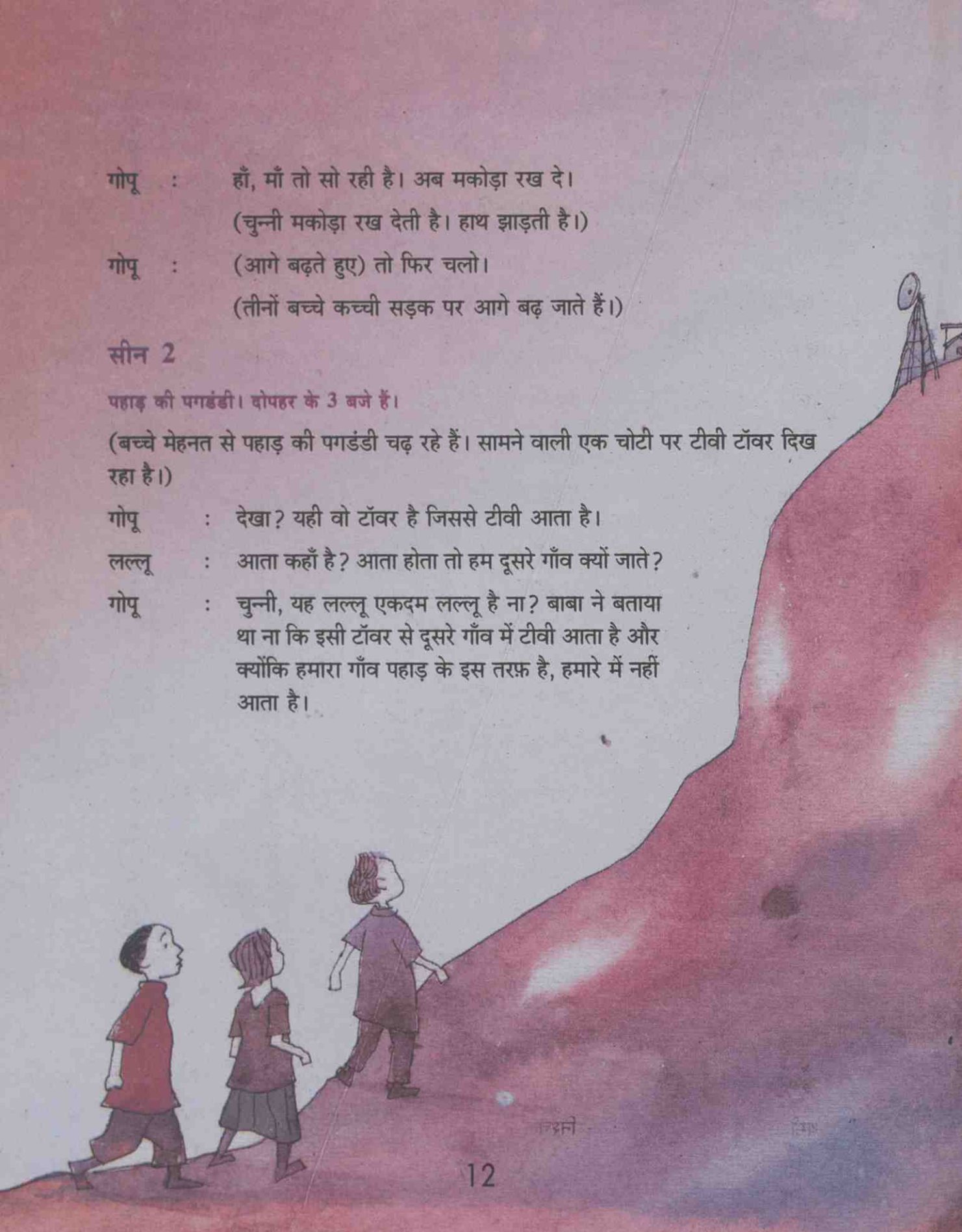

चुन्नी : हाँ, मेरे बापू ने तो बक्सा और एन्टीना भी खरीद लिया था... हमने एन्टीना को सब तरफ़ घुमाया... पर टीवी पकड़ा ही नहीं।

गोपू : टीवी तो जादू है! ऐसे थोड़े-ही पकड़ेगा। हाय... क्या चीज़ है टीवी...

(गोपू टीवी की यादों में खोया हुआ आगे बढ़ता है, बाकी दोनों उसके पीछे-पीछे चल रहे हैं।)

सीन 3

मनोहर चाचा के घर का कमरा। सुबह के 8 बजे हैं।

(टीवी पर 26 जनवरी की परेड आ रही है। गोपू और उसके बाबा टकटकी लगाए देख रहे हैं। मनोहर चाचा बगल में बैठे हैं। टीवी में झाँकियाँ चल रही हैं, और एक कमेंट्री भी।)

टीवी से आती कमेंट्रीः और यह है झाँकी असम राज्य की... आगे-आगे बीहू नृत्य करती महिलाएँ...

गोपू : बाबा यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?

मनोहर चाचा : यह भी टीवी से ही आ रही है गोपू लाल!

गोपू : जादू है ना...!!

सीन 4

पहाड़ी सड़क। शाम के 4 बजे हैं।

(तीनों बच्चे सड़क किनारे चल रहे हैं।)

गोपू : जादू था... सचमुच! चलो अब सड़क पार करनी है।

(सड़क पार करने की कोशिश। सामने से तेज़ी से एक बस आती है। चुन्नी दौड़कर पार कर लेती है, गोपू और लल्लू खड़े रह जाते हैं। बस में ज़ोर से ब्रेक लगता है। ड्राइवर गुस्से में सिर बाहर निकालता है।)

ड्राइवर : अबे देखके चलो...

(गोपू और लल्लू जल्दी-से सड़क पार करते हैं।)

चुन्नी : तुम लोग सच में छोटे बच्चे हो। सड़क पार करना भी नहीं आता?

गोपू : (झेंपते हुए) जल्दी चलो... अब देर हो रही है।

सीन 5

कस्बे की सब्ज़ी मंडी। शाम के 5 बजे हैं।

(लल्लू सब्ज़ी मंडी की भीड़ में थोड़ा पीछे रह गया है। गोपू और चुन्नी आगे चल रहे हैं। चुन्नी डरी हुई है।)

चुन्नी : तुमने कहा था जल्दी पहुँचेंगे... शाम तक वापस आएँगे...

गोपू : बस, आने वाला है मनोहर चाचा का घर।

(चुन्नी एक लंबे आदमी से टकरा जाती है। वो आदमी जल्दी में है, संभलते हुए आगे बढ़ जाता है।)

चुन्नी : (रुआँसी होकर) कब से कह रहे हो आने वाला है।

गोपू : (पीछे मुड़कर) अरे ये लल्लू कहाँ रह गया। और तू रो मत अब... टीवी देखना है ना? उसमें पता है– लोग बक्से के अंदर बंद होते हैं... छोटे-छोटे दिखते हैं... तेरे मकोड़ों की तरह... (लल्लू दिखता है) ए लल्लू.... जल्दी आ ना!

(लल्लू दौड़ता हुआ आता है। तीनों हाथ पकड़कर चलने लगते हैं।)

सीन 6

कस्बे की गली। शाम का समय।

(बच्चे एक गली के मोड़ पर हैं। सामने कच्चे-पक्के मकानों की कतार है।)

गोपू : बस यही गली है। इसीमें हैं मनोहर चाचा...

लल्लू : तो चलो...

गोपू : (मकानों को देखता हुआ) हाँ... लेकिन याद करने दो, कौन-सा घर है...

चुन्नी : पर कैसे...

गोपू : अरे, उस घर के ऊपर टीवी का डंडा लगा हुआ है... एन्टीना!
(तीनों ध्यान से घरों को देखते हैं। गोपू का चेहरा उतर जाता है।)

गोपू : पर यहाँ तो...

लल्लू : सबकी छत पे लगा है!

चुन्नी : टीवीवाला डंडा! अब क्या करेंगे?

गोपू : (हिम्मत हारते हुए) पता नहीं। मनोहर चाचा ने बताया था उनके घर ही टीवी है... पर यहाँ तो सबके घर है।

लल्लू : (बेहद हताश) अब हम वापस चलें? (आसमान देखते हुए) नहीं? अंधेरा हो रहा है।

चुन्नी : हम खो गए।

(गोपू कुछ नहीं बोलता बस रोने लगता है। बाकी दोनों भी रोने लगते हैं।)

सीन 7

कस्बे की सड़क। देर शाम का समय।

(भीड़ जमा है। बच्चे रो रहे हैं। कस्बे के लोग उन्हें चुप करा रहे हैं।)

कस्बेवाला 1 : कहते हैं मनोहर चाचा से मिलने आए हैं... कीरतपुर से...

कस्बेवाला 2 : अब चुप हो जाओ। डरो मत। क्या नाम है तुम्हारा?

लल्लू : लल्लू!

चुन्नी : (रोते हुए) मुझे घर जाना है।
(मनोहर चाचा आ जाते हैं। गोपू को उठा लेते हैं।)

मनोहर : अरे गोपू... तुम अकेले कैसे आ गए?

गोपू : टीवी देखना था। हम तीनों को।
(कस्बेवाले एक-दूसरे का मुँह देखते हैं। मनोहर बच्चों को ले जाता है।)

सीन 8

मनोहर चाचा का घर। रात का समय।

(बाबा ने गोपू को गोद में बिठाया है। चुन्नी और लल्लू भी बैठे हैं।)

बाबा : (मनोहर को) गोपू शैतान है, यह सबको पता है। पर इतना शैतान... हमने सोचा नहीं था।

मनोहर : और पूरा रास्ता याद था इसे! चलो भई... अब टीवी चलाया जाए...। इतनी दूर से आए हैं तीन दीवाने।

(मनोहर टीवी चलाता है। गोपू, लल्लू और चुन्नी सीधे होकर बैठ जाते हैं। टीवी से आवाज़ आती है...तस्वीर दिखना अभी बाकी है।)

टीवी की आवाज़ : और मद्रास का अधिकतम तापमान रहा 34 डिग्री...

(गोपू की आँखें फैल रही हैं। टीवी के शीशे पर हल्की-हल्की रोशनी भी फैल रही है। तस्वीरें किसी भी पल दिख जाएँगी। और तभी, बिजली चली जाती है। घुप्प अंधेरा हो जाता है।)

गोपू, चुन्नी और लल्लू : (एक साथ अंधेरे में) हे भगवान...

वरुण ग्रोवर

26 जनवरी 1980 को हिमाचल प्रदेश के सुंदरनगर में जन्म। हिंदी फ़िल्मी क्षेत्र में पटकथाकार, गीतकार एवं निर्देशक के रूप में मशहूर।

◆ डायरी लिखें।

गोपू घर पहुँचा। वह यादों में खो गया। फिर डायरी लिखने लगा।

• लिखें, गोपू की डायरी।

◆ *पटकथा के आधार पर तालिका की पूर्ति करें।*

दृश्य	स्थान	समय	घटना	पात्र

◆ *पटकथा की मूल-कथा पन्ना 24 में है, पढ़ें।*
कहानी की घटनाओं को क्रम से लिखें।

क्रम संख्या	घटना

◆ *पटकथा और कहानी की तुलना करें। टिप्पणी लिखें।*

मैया की आई
वृद्धाश्रम से चिट्ठी
कैसे हो बेटा

• परिवारों में इस तरह का संकट क्यों?

कहानी

पक्षी और दीमक

मुक्तिबोध

एक था पक्षी। वह नीले आसमान में खूब ऊँचाई पर उड़ता जा रहा था। उसके साथ उसके पिता और मित्र भी थे।

सब, बहुत ऊँचाई पर उड़नेवाले पक्षी थे। उनकी निगाहें भी बड़ी तेज थीं। उन्हें दूर-दूर की भनक और दूर-दूर की महक भी मिल जाती।

एक दिन वह नौजवान पक्षी ज़मीन पर चलती हुई एक बैल गाड़ी को देख लेता है। उसमें बड़े-बड़े बोरे भरे हुए हैं। गाड़ीवाला चिल्ला-चिल्लाकर कहता है, "दो दीमकें लो, एक पंख दो।"

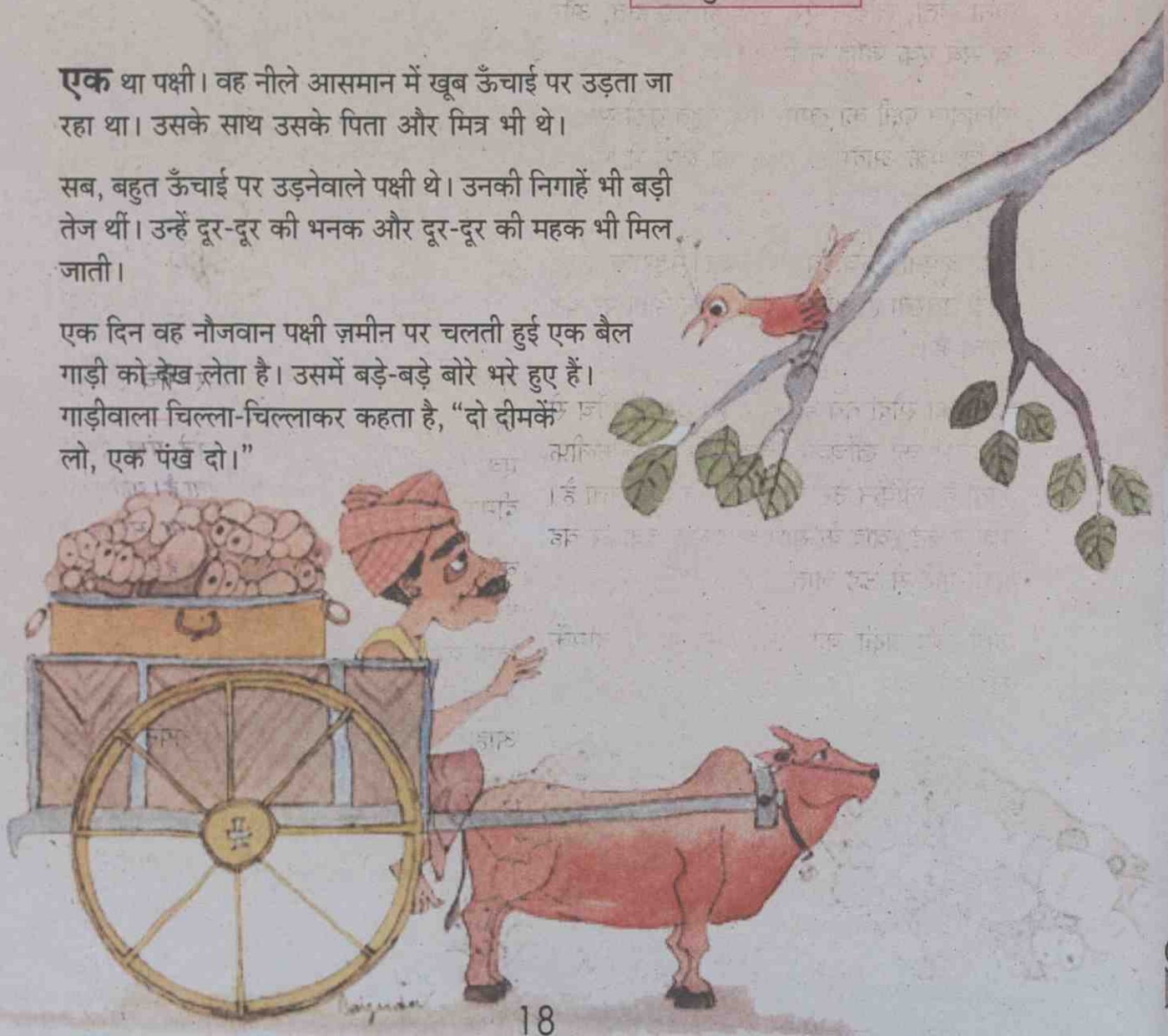

उस नौजवान पक्षी को दीमकों का शौक था। वैसे तो ऊँचे उड़नेवाले पंछियों को, हवा में ही बहुत से कीड़े तैरते हुए मिल जाते, जिन्हें खाकर वे अपनी भूख थोड़ी-बहुत शांत कर लेते।

लेकिन दीमकें सिर्फ ज़मीन पर मिलती थीं। कभी-कभी पेड़ों पर– ज़मीन से तने पर चढ़कर, ऊँची डाल तक, वे अपना मटियाला लंबा घर बना लेती, लेकिन ऐसे कुछ ही पेड़ होते, और वे सब एक जगह न मिलते।

नौजवान पक्षी को लगा– यह बहुत बड़ी सुविधा है कि एक आदमी दीमकों को बोरों में भरकर बेच रहा है।

वह अपनी ऊँचाइयाँ छोड़कर मँड़राता हुआ नीचे उतरता है, और पेड़ की एक डाल पर बैठ जाता है।

दोनों का सौदा तय हो जाता है। अपनी चोंच से एक पर को खींचकर तोड़ने में उसे तकलीफ़ होती हैं; लेकिन उसे वह बरदाश्त कर लेता है। मुँह में बड़े स्वाद के साथ दो दीमकें दबाकर वह पक्षी फुर्र से उड़ जाता है।

अब उस पक्षी को गाड़ीवाले से दो दीमकें खरीदने और एक पर देने में बड़ी आसानी मालूम हुई। वह रोज़ तीसरे पहर नीचे उतरता और गाड़ीवाले को एक पंख देकर, दो दीमकें खरीद लेता।

पक्षी अपने पंख देकर दीमक लेता है। यहाँ पक्षी का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन उसके पिता ने देख लिया। उसने समझाने की कोशिश की कि बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उनके लिए अपने पंख तो

हरगिज़ नहीं दिए जा सकते।

'दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उनके लिए अपने पंख तो हरगिज़ नहीं दिए जा सकते।' इस कथन के आधार पर वर्तमान संस्कृति का विश्लेषण करें।

लेकिन, उस नौजवान पक्षी ने बड़े ही गर्व से अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया। उसे ज़मीन पर उतरकर दीमकें खाने की चट लग गई थी। अब उसे न तो दूसरे कीड़े अच्छे लगते, न फल, न अनाज के दाने। दीमकों का शौक अब उसपर हावी हो गया था।

लेकिन, ऐसा कै दिनों तक चलता। उसके पंखों की संख्या लगातार घटती चली गई। अब वह, ऊँचाइयों पर, अपना संतुलन साध नहीं सकता था, न बहुत समय तक पंख उसे सहारा दे सकते थे। आकाश-यात्रा के दौरान उसे, जल्दी-जल्दी पहाड़ी चट्टानों, पेड़ों की चोटियों, गुंबदों और बुर्जों पर हाँफते हुए बैठ जाना पड़ता। उसके परिवारवाले तथा मित्र ऊँचाइयों पर तैरते हुए आगे बढ़ जाते। वह बहुत पिछड़ जाता। फिर भी दीमक खाने का उसका शौक कम नहीं हुआ। दीमकों के लिए गाड़ीवाले को वह अपने पंख तोड़-तोड़कर देता रहा।

फिर, उसने सोचा कि आसमान में उड़ना ही फिजूल है। वह मूर्खों का काम है। उसकी हालत यह थी कि अब वह आसमान में उड़ ही नहीं सकता था। वह सिर्फ़ एक पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ तक पहुँच पाता। धीरे-धीरे उसकी यह शक्ति भी कम होती गई। और एक समय वह आया जब वह बड़ी मुश्किल से, पेड़ की एक डाल से लगी हुई दूसरी डाल पर, चलकर, फुदककर पहुँचता। लेकिन दीमक खाने का शौक नहीं छूटा।

बीच-बीच में गाड़ीवाला बुत्ता दे जाता। वह कहीं नज़र में न आता। पक्षी उसके इंतज़ार में घुलता रहता।

लेकिन, दीमकों का शौक जो उसे था। उसने सोचा, "मैं खुद दीमकें ढूँढूँगा।" इसलिए वह पेड़ पर से उतरकर ज़मीन पर आ गया; और घास के एक लहराते गुच्छे में सिमटकर बैठ गया।

फिर, एक दिन उस पक्षी के जी में न मालूम क्या आया। वह खूब मेहनत से ज़मीन में से दीमकें चुन-चुनकर, खाने के बजाय, उन्हें इकट्ठा करने लगा। अब उसके पास दीमकों के ढेर के ढेर हो गए।

फिर, एक दिन एकाएक, वह गाड़ीवाला दिखाई दिया। पक्षी को बड़ी खुशी हुई। उसने पुकारकर कहा, "गाड़ीवाले! ओ गाड़ीवाले! मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था।"

पहचानी आवाज़ सुनकर गाड़ीवाला रुक गया। तब पक्षी ने कहा, "देखो, मैंने कितनी सारी दीमकें जमा कर ली हैं।"

गाड़ीवाले को पक्षी की बात समझ में नहीं आई। उसने सिर्फ़ इतना कहा, "तो मैं क्या करूँ।"

"ये मेरी दीमकें ले लो, और मेरे पंख मुझे वापस कर दो," पक्षी ने जवाब दिया।

गाड़ीवाला ठठाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "बेवकूफ, मैं दीमक के बदले पंख लेता हूँ, पंख के बदले दीमक नहीं!"

पक्षी को बेवकूफ कहने के संबंध में आपकी राय क्या है?

गाड़ीवाले ने 'पंख' शब्द पर बहुत ज़ोर दिया था।

गाड़ीवाला चला गया। पक्षी छटपटाकर रह गया।

एक दिन एक काली बिल्ली आई और अपने मुँह में उसे दबाकर चली गई।

तब उस पक्षी का खून टपक-टपककर ज़मीन पर बूँदों की लकीर बना रहा था।

◆ **नमूने के अनुसार कहानी से प्रसंगों को चुनकर लिखें।**

व्यवहार	प्रसंग
◆ अलसतापूर्ण कार्य करना। ◆ तात्कालिक लाभ के लिए अस्तित्व नष्ट करना। ◆ बड़ों की बातों को बिना सूझ-बूझ के धिक्कारना। ◆ प्रलोभन में पूरी तरह फँस जाना। ◆ अपनी गलतियों पर सफ़ाई खोजना। ◆ खोए हुए अस्तित्व को फिर से पाने की कोशिश करना। ◆ धोखेबाजी को पहचानकर निराश होना।	◆ नौजवान पक्षी को लगा– यह बहुत बड़ी सुविधा है कि एक आदमी दीमकों को बोरों में भरकर बेच रहा है।

- *'पक्षी और दीमक' कहानी में ये किन-किन का प्रतिनिधित्व करते हैं?*

गाड़ीवाला	पक्षी	दीमक	पंख	बिल्ली

- *आज के ज़माने में 'पक्षी और दीमक' कहानी की प्रासंगिकता कहाँ तक है? चर्चा करके टिप्पणी लिखें।*

- *पक्षी की चरित्रगत विशेषताओं का विश्लेषण करें। टिप्पणी लिखें।*

अनुबद्ध कार्य

- *'पक्षी और दीमक' को फिल्माएँ।*

  इसके लिए पटकथा तैयार करें।

इसपर विचार करें :

एक दिन उसके पिता ने देख लिया। उसने समझाने की कोशिश की कि बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उनके लिए अपने पंख हरगिज़ नहीं दिए जा सकते।

- रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :
  - ये शब्द कैसे बने हैं?
  - क्या, इनका विभाजन संभव है? तो, कैसे?

◆ पूरी इकाई से एक बार और गुज़रें। ऐसे परसर्गयुक्त सर्वनामों को पहचानें।

परसर्गयुक्त शब्द	सर्वनाम	परसर्ग

'पक्षी और दीमक' के बारे में...

मुक्तिबोध की कहानी 'पक्षी और दीमक' दरअसल एक लंबी कहानी है, जिसके भीतर पक्षी और दीमक की कहानी समाहित है। इसी आधार पर कहानी का शीर्षक भी रखा गया है। इस कहानी को कथानायक 'मैं' एक अन्य पात्र श्यामला को सुनाता है। यहाँ संपूर्ण कहानी के भीतर की एक छोटी कहानी ही 'पक्षी और दीमक' शीर्षक पर दी गई है।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

हिंदी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ व्यक्तित्व। सर्वाधिक चर्चा के केंद्र में रहनेवाले कहानीकार एवं समीक्षक। प्रमुख रचनाएँ : चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी भूरी खाक धूल (कविता संग्रह); काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी (कहानी संग्रह); नई कविता का आत्म संघर्ष (आलोचना)

जन्म : 13 नवंबर 1927
मृत्यु : 11 सितंबर 1964

अतिरिक्त वाचन के लिए

कहानी

टीवी

वरुण ग्रोवर

बात सिर्फ़ इतनी-सी थी कि गोपू को टीवी देखना था। और यही सोचकर तीनों निकल पड़े थे।

गोपू का गाँव पहाड़ के उस तरफ़ था जहाँ टीवी नहीं आता था। शाम को डूबने से पहले सूरज पहाड़ के सबसे ऊपर लगे उस बड़े-से टॉवर की नोक पे कुछ पलों के लिए टिक जाता था। गोपू को पता था कि उसी टॉवर से टीवी आता है। "वो टॉवर अभी हमारे गाँव में टीवी नहीं देता... वरना चुन्नी के पिताजी ने तो बक्सा और एन्टीना, दोनों खरीद लिए हैं।" गोपू ने लल्लू को अपनी माँ के लहज़े में समझाते हुए कहा।

गोपू को उसके बाबा ने पहाड़ के उस पारवाले गाँव में टीवी दिखाई थी - अपने दोस्त मनोहर के घर। गोपू ने उस टीवी में 26 जनवरी की परेड देखी थी... बड़ी-बड़ी तोपें, नाचते लड़के-लड़कियाँ, झाँकियाँ, और पता नहीं कहाँ से आती एक आवाज़ जो सारा दृश्य समझा रही थी। जादू था जादू!

तो गोपू ने यह बात अपने दोस्त लल्लू को और लल्लू ने चुन्नी को बताई। लल्लू और चुन्नी को दूसरे गाँव जाकर टीवी देखने का गोपू का आइडिया पसंद आया। ज़्यादा देर नहीं लगेगी, इसका गोपू को अंदाज़ा था। दोपहर को निकले तो शाम तक वापस आ जाएँगे। चुन्नी यह बात किसीको ना बताए इसलिए गोपू ने उसको दो मकोड़ों की कसम भी खिलाई। चुन्नी को मकोड़े बहुत पसंद थे और उनकी झूठी कसम वो कभी नहीं खाती थी। और यूँ, अपनी-अपनी माँओं के सोते ही, तीनों टीवीवाले पहाड़ की तरफ निकल पड़े।

बड़ी मुश्किल से पहाड़ चढ़कर उस पार पहुँचे ही थे कि अचानक सामने बड़ी-सी बस आ गई। चुन्नी तो आगे निकल गई पर गोपू और लल्लू ठगे से खड़े रह गए। बसवाले ने झटके से ब्रेक लगाई और मुँह बाहर निकालकर फटकारा भी। चुन्नी ने भी मौका देखकर डाँट लगा दी और अब से हाथ पकड़कर संग चलने को कहा।

मनोहर चाचा का गाँव अब दूर नहीं था। पहाड़ों में रास्ता ढूँढ़ना नहीं पड़ता, खुद बन जाता है। गोपू को पता था कि इस मोड़ के थोड़ा आगे सब्ज़ी मंडी है। उसी के पीछेवाले रस्ते से वो घर आता है जहाँ उसे टीवी के दर्शन हुए थे। सब्ज़ी मंडी में आज बहुत भीड़ थी। चुन्नी थोड़ा डर गई। गोपू ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे टीवी के जादू के बारे में बताने लगा। गोपू को मनोहर चाचा के घर की पहचान थी क्योंकि उसकी छत पर एक सुंदर-सा, लहराता एन्टीना लगा हुआ था। पर यह क्या? इस सड़क की तो हर मुंडेर पर वैसे ही एन्टीना था! गोपू ने एक-दो घरों में झाँककर पहचानने की कोशिश भी की लेकिन यहाँ तो सब घर भी एक से थे। और एन्टीना... यही तो उसकी निशानी थी।

अब गोपू की भी रुलाई छूट गई। उसे रोता देख चुन्नी और लल्लू भी रोने लगे। बीच सड़क में तीन बच्चों को रोता देख तुरंत ही लोग जमा हो गए और सवाल एवं दुलार बरसाने लगे। गोपू ने बताया कि वे लोग मनोहर चाचा के घर टीवी देखने आए थे। लेकिन यहाँ तो सबके घर ही टीवी है। चुन्नी ने कहा कि ये गोपू का ही आइडिया था। लल्लू ने कहा कि उसे अब टीवी नहीं देखना, घर जाना है। जल्दी ही मनोहर चाचा भी आ गए जो हैरान थे कि तीन छोटे बच्चे इतनी दूर से टीवी देखने आए हैं।

तीनों के घर ख़बर भिजवा दी गई कि परेशान ना हों। बाबा भी आ गए और तय हुआ कि आज टीवी देखकर ही वापस जाएँगे। तीनों चाव से बैठे और टीवी का बटन दबाया गया। एक जादुई आवाज़ आई और बक्से के काँच पर हल्की-सी रोशनी की हलचल हुई... गोपू की आँखें चौड़ी हुईं पर तभी, बिजली चली गई।

मदद लें...

पुल बनी थी माँ

आदत	-	habit
कंधा उतरना	-	दुर्बल होना
पुल	-	bridge
बेधड़क	-	बिना बाधा के
वृषभ कंधा	-	सशक्त कंधा

टीवी

नोक	-	అగ్రభాగం अग्रभाग முனைப்பகுதி ಯು ತುದಿಭಾಗ
लहज़ा	-	बोलने का ढंग उच्चारणरीति - உச்சரிப்பு முறை ಯುಉಚ್ಚರಿಸುವ ವಿಧಾನ
तोप	-	പീരങ്കി பீரங்கி ಯುಫಿರಂಗಿ
झाँकी	-	मनोहर दृश्य ടാബ്ലോ டாப்லோ ಯುನಿಶ್ಚಲ ದೃಶ್ಯ
अंदाज़ा	-	अनुमान approximation ഏകദേശം ಯು

मकोड़ा	-	ചെറിയ പുഴു சிறு புழு యు సణ్ణ హుళ
कसम खाना	-	कार्य करने की प्रतिज्ञा करना।
कसम खिलाना	-	बाध्य करना।
ठगना	-	ചതിക്കുക धोखा देना ஏமாற்று యు మోలుసు
झटका	-	अचानक आई विपत्ति
फटकारना	-	क्रोधपूर्वक कड़ी बातें कहना ശകാരിക്കുക திட்டுதல் యు బయ్యువుదు
डाँटना	-	फटकारना ശകാരിക്കുക to scold திட்டுதல் యు బయ్యువుదు
मुंडेर	-	വീടിന്റെ പാരപ്പെറ്റ് a parapet வீட்டின் கைப்பிடிச் சுவர் యు మనయ పారప్పేట్టు
दुलार	-	प्यार
काँच	-	screen திரை యు పరదే
फर्क	-	अंतर difference வித்தியாசம் యువ్యత్యాస
किरदार	-	role பங்கு యు పాత్ర

पक्षी और दीमक

इंतज़ार - प्रतीक्षा

खूब - बहुत enough വേണ്ടുവോളം வேண்டுமளவிற்கு
ಸಾಕಷ್ಟು

गुच्छा - एक प्रकार की एकत्रित वस्तुओं का समूह
ഒരേ തരത്തിലുള്ള വസ്തുക്കളുടെ കൂട്ടം
ஒரேதரத்திலுள்ள பொருட்களின் கூட்டம்
ಒಂದೆ ತರತ ವಸ್ತುಗಳ ಸಮೂಹ

गुंबद - गोल और उभरी हुई छत (जैसे:-मस्जिद का गुंबद) ഗോപുരം
கோபுரம் ಗೋಪುರ, ಟವರ್

घटना - कम होना

घास - तृण, तिनका

घुलता - क्षीण होना

कै - कितना

चट्टान - पत्थर का अत्यधिक विशाल खंड (शिलाखंड)

चोंच - पक्षियों के ओंठ Beak കൊക്ക് பறவையின் அலகு
ಯುಕೊಕ್ಕು

चोटी - पेड़ों की शिखा

टपकना - बूँद-बूँद गिरना dripping തുള്ളി തുള്ളിയായി വീഴൽ
துள்ளித்துள்ளியாக விழுவது ಹನ್ ಹನಿಯಾಗಿ ಬೀಳಲು

तकलीफ़ - कष्ट, संकट Difficulty ബുദ്ധിമുട്ട് കഷ്ടം యుకష్ట

तना - पेड़ का धड़ Trunk of a tree വൃക്ഷത്തിന്റെ തായ്ത്തടി

மரத்தின் தாய்த்தடி ಯುಮರತ ಕಾಂಡ

तेज़ - तीक्ष्ण या पैनी धारवाला മൂർച്ചയുള്ള Sharp கூர்மையான

యు హరితవాద

दीमक - सफेद चींटी, वल्मीक ചിതൽ white ant கரையான்

యు గీద్దలు

निगाह - नज़र, दृष्टि

पंख - डैना, पर ചിറക് wing சிறகு యు రేక్క

पहर - तीन घंटे का समय യാമം நிமிடம், யாமம் యు నిమిష

फिजूल - निरर्थक, व्यर्थ

फुदकना - उछलते हुए चलना to hope ചാടിച്ചാടി നടക്കുക

துள்ளித்துள்ளி நடத்தல் ಹಾರಿಹಾರಿ ನಡೆಯುವುದು

भनक - मंद ध्वनि

बरदाश्त - सहन

बुर्ज - मीनार ഗോപുരം கோபுரம் టవర్

बुत्ता - കപടം கபடம் కపట

बेवकूफ़ - मूर्ख Stupid വിഡ്ഢിയായ முட்டாளான

ఆవివేకి

बोरा	-	sack ചാക്ക് கோணிப்பை ಯುಗೋಣಿ ಚೀಲ
मटियाला	-	मटमैला ചെളിനിറഞ്ഞ அழுக்குப்படிந்த ಕೆಸರು ತುಂಬಿತ
महक	-	गंध या सुगंध
सिमटना	-	संकुचित होना ചുരുണ്ട് കൂടുക To be contracted சுருண்டு கூடுவது ಯು
सौदा	-	വ്യാപാരം வியாபாரம் ವ್ಯಾಪಾರ
हरगिज़	-	कभी never ഒരിക്കലും ஒருபோதும் ಒಮ್ಮೆಯಾದರು
हाँफना	-	കിതക്കുക மூச்சு முட்டுவது ಯುಏದುಸಿರು

अधिगम उपलब्धियाँ

- *संकेतों के आधार पर वर्गपहेली की पूर्ति करता है।*
- *कविता का परिचय देते हुए टिप्पणी लिखता है।*
- *पटकथा के मार्मिक प्रसंग के आधार पर डायरी लिखता है।*
- *कहानी पढ़कर चरित्र-चित्रण करता है।*
- *कहानी को फिल्माने के लिए पटकथा तैयार करता है।*
- *सर्वनाम और परसर्ग के योग से होनेवाले रूपांतर समझकर प्रयोग करता है।*

इकाई - 2

"अब-तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखनेवाली घटनाओं का काल-क्रमानुसार विवरण इतिहास होता है। दूसरे शब्दों में मानवजाति से संबंधित विशिष्ट घटनाओं का नाम ही इतिहास है।"

अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखनेवाली घटनाओं का काल-क्रमानुसार विवरण इतिहास होता है।

बताएँ, हमारे देश की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ कौन-कौन सी हैं?

जिस गली में मैं रहता हूँ...

मिर्ज़ा ग़ालिब

अनुवादक : डॉ. कैलाश नारद

अंग्रेज़ों ने दिल्ली में आते ही सीधे-सादे लोगों को मारना शुरू कर दिया। उन्होंने गरीबों के घर भी जला दिए। गोरों के डर से दिल्लीवालों में भगदड़ मच गई। अपनी-अपनी जान बचाकर वे भाग निकले।

जिस गली में मैं रहता हूँ उसमें सिर्फ़ दस-बारह घर थे। गली में घुसने का सिर्फ़ एक ही रास्ता था। वहाँ कोई कुआँ नहीं था। जो लोग भाग नहीं पाए उन सब ने मिलकर गली का दरवाज़ा भीतर से बंद कर दिया और वहाँ पत्थर रख दिए।

घरों में खाने-पीने का जितना सामान था, धीरे-धीरे खत्म होने लगा। पानी की बड़ी दिक्कत थी। लोग बड़ी सावधानी से आहिस्ता-आहिस्ता उस पानी को पी रहे थे, लेकिन आखिरकार वे घड़े भी खाली हो गए। ऐसे में गली में रहने वाले दो दिन और दो रात तक भूखे-प्यासे समय काटते रहे। लेकिन जब प्यास बर्दाश्त नहीं हुई, तो परेशान लोगों ने गली का दरवाज़ा खोल दिया। वे पानी की तलाश में बर्तन लेकर निकल पड़े। लेकिन पानी तो दूर-दूर तक कहीं नहीं था। शोरा बारूद बनाने के काम में आता है। उसी शोरे का पानी जब आसपास मिला तो गलीवाले उस पानी को घरों

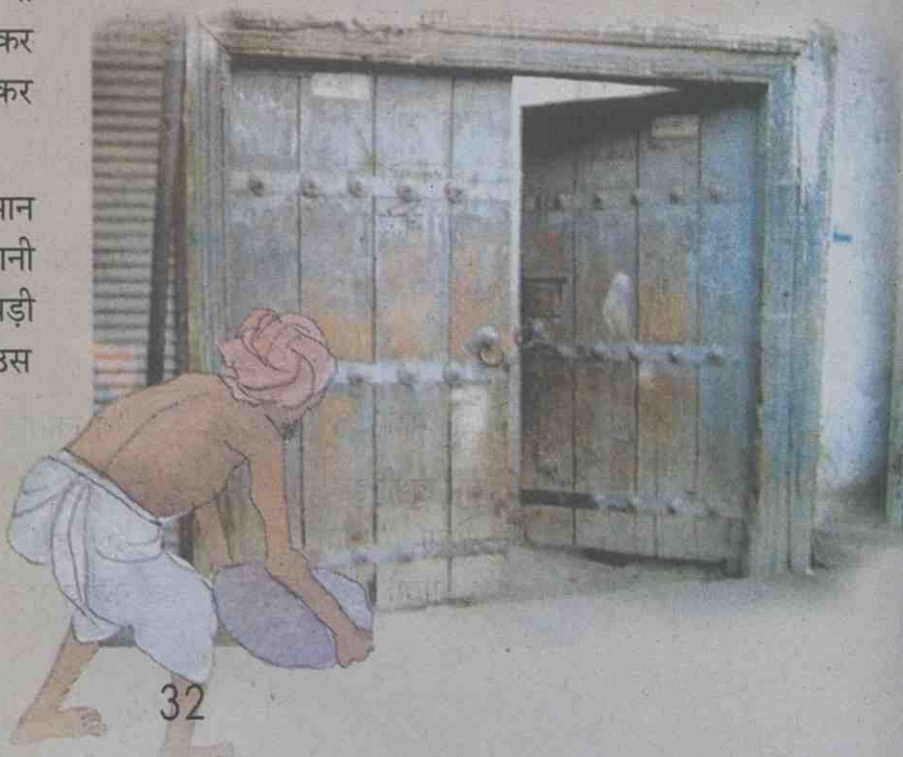

में ले आए। वैसे ज़हरीले पानी को पीकर ही उन्होंने प्यास बुझाई। वह पानी इतना कड़वा और बदबूदार था कि लगा जैसे पानी नहीं, मौत पी रहे हों।

'पानी नहीं, मौत पी रहे हों' यहाँ किस हालत की ओर संकेत है?

एक दिन बरसात हुई। खूब पानी बरसा। हमने एक चादर बाँध ली और एक मटका उसके नीचे रख दिया। वह पानी ही उस वक्त हमारे लिए सबसे बड़ी दौलत थी।

असली मुसीबत 5 अक्तूबर 1857 को आई, जब कुछ अंग्रेज़ मेरे घर में घुस आए। उन्होंने मेरे साथ मेरे दोनों बच्चों और नौकरों के साथ ही कुछ पड़ोसियों को भी गिरफ़्तार कर लिया। वहाँ से कुछ दूरी पर कर्नल ब्राउन नाम का एक अंग्रेज़ अफ़सर था। गिरफ़्तार किए गए लोग एक-एक कर उसके सामने पेश किए जा रहे थे। ब्राउन का चेहरा सुर्ख था। आँखें भी लाल-लाल थीं। उसकी ऊँचाई छह फुट से भी ज़्यादा थी। उसने मुझसे पूछा, "आप क्या करते हैं?"

मैंने कहा, "उर्दू में कविता लिखता हूँ।"

"तो तुम पोयट हो?" उसने कहा।

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी, "हाँ।"

मेरे जवाब से ब्राउन को खुशी हुई। उसने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, "इनको इज़्ज़त के साथ घर वापस छोड़ आओ।"

मैंने कर्नल ब्राउन से निवेदन किया कि मेरे साथ गिरफ़्तार किए गए पड़ोसी बेहद सीधे-सादे लोग हैं। उन्हें भी रिहा कर दिया जाए।

"ये लोग भी कविता करते हैं।" मैंने कहा।

कर्नल ने उनको भी घर जाने की इज़ाज़त दे दी। इस तरह कविता के कारण उस रोज़ करीब पचास आदमियों की जानें बच गईं।

हम गलीवालों ने तो किसी तरह अपने प्राण बचा लिए, मगर मैं उन हज़ारों अभागे दिल्लीवालों के बारे में क्या कहूँ, जो हवालात और कैदखाने में बंद कर दिए गए थे। जेल शहर से बाहर थी और हवालात दिल्ली के भीतर। इन दोनों ही जगहों में बेशुमार बेगुनाहों को ठूँस-ठूँसकर भर दिया गया था- इस कदर भर दिया गया कि लगता था, आदमी के भीतर आदमी समाया जा रहा हो। साँस लेने में भी दिक्कत हो रही थी। इन दोनों ही कैदखानों के बंदियों को बाद में फाँसी दे दी गई। नहीं मालूम, कितने लाख लोग मार डाले गए।

दिल्ली में अब कुछ ही हज़ार लोग बचे होंगे। बाकी सब, अंग्रेज़ों के गुस्से का शिकार हो गए। बचे सिर्फ़ वे, जो दिल्ली से भाग गए। वे लोग खुशकिस्मत थे, वरना उन्हें भी फाँसी दे दी जाती। दिल्ली में रहना ही उन दिनों मानों अपराध हो गया था।

मेरी पहचान का भिश्ती था- चिराग अली। बेहद सीधा आदमी। रोज़ सुबह-शाम नहर का पानी अपनी मशक में भरता और अल्लाह के गुण गाता हुआ सड़कों को सींचा करता। खाने के लिए जो भी रूखी-सूखी मिल जाती उसीको गले के नीचे उतार अपने में मग्न रहता। एक रोज़ दिल्ली के बड़े हाकिम हडसन साहब जब सड़क से अपने घोड़े पर सवार होकर निकल रहे थे, चिराग अली सड़क सींच रहा था। उसने हडसन साहब को सलाम नहीं किया, ईश्वर के गुण गाता रहा। हडसन साहब को जो गुस्सा आया, उन्होंने अपनी तलवार से अभागे चिराग अली का पेट चीर डाला और उसकी लाश दिल्ली दरवाज़े पर टाँग दी। इन्हीं हडसन साहब ने बादशाह बहादुर शाह ज़फर के दोनों बेटों शाहज़ादा फज़ल और मिर्ज़ा अबूबकर का भी खून कर उनके सिर दिल्ली दरवाज़े पर लटका दिए थे। हडसन को हिंदुस्तानियों का खून करने में बड़ा मज़ा आता था।

मेरे पड़ोस में एक गरीब औरत मेहरुन्निसा रहती हैं। उसके पति की मौत को सात साल हुए हैं। अकेली औरत। दूसरों के घर में झाड़ू लगाकर किसी तरह से अपनी गुज़र-बसर करती थी। लेकिन जब घर ही नहीं रहे, बस्ती की बस्तियाँ जला दी गईं तो मेहरुन्निसा काम न मिलने से भूखी मरने लगी। आज उसके यहाँ मैंने दस रोटियाँ पहुँचाईं। दूसरी जो दस रोटियाँ बचीं, उससे मेरे दोनों बेटों और नौकरों का काम चला। मेरे हिस्से में डेढ़ रोटी आई। फिर भी तसल्ली थी कि मेरी रोटियों से मेहरुन्निसा और उसकी दो बेटियों की भूख तो बुझी। मेरा क्या। मेरी तो भूखा रहने की आदत ही हो गई है।

'मेरी तो भूखा रहने की आदत ही हो गई है' –ग़ालिब को भूखा रहने की आदत कैसे हुई होगी?

मेरा पड़ोसी हीरासिंह एक नौजवान है। वह मुझे हिम्मत बँधाता है। इस आधे वीरान और आधे आबाद शहर में शिवजी राम भी तो हैं जो मुझसे कहते हैं कि मुसीबत के ये दिन कभी न कभी तो खत्म होंगे। उनका लड़का बालमुकुंद मुझे अपने पिता की तरह चाहता है। जब मैं बीमार पड़ा, बालमुकुंद अंग्रेज़ सिपाहियों की नज़रों से बचते-बचाते एक हकीम को मेरे पास ले आया। हकीम की दवा से मेरी जान बची। मुझे ज़िंदगी बालमुकुंद की मदद से ही वापस मिली। दूर के दोस्तों में मेरठ के हरिगोपाल 'तुफ्ता' हैं। वे शायरी करते हैं। उन्होंने मुझे अपने घर मेरठ से नकद रुपया भेजा है। गेहूँ की कुछ बोरियाँ भी 'तुफ्ता' के आदमी मेरे घर रख गए हैं। उन्होंने कहला भेजा है कि मैं फ़िक्र न करूँ। वे मेरी मदद हर किस्म से करते रहेंगे।

ये बातें, जिनका लिखना ज़रूरी नहीं था, सिर्फ़ इसलिए लिखी कि इन लोगों की दरियादिली और हमदर्दी का शुक्रिया अदा हो जाए। रात को चिराग नहीं जलते। दिन में चूल्हे नहीं सुलगते। जब अनाज ही नहीं है तो चूल्हे कहाँ से जलें? मकानों के मालिक मार डाले गए हैं। वे होते तो घरों में गल्ला, पानी आता। ग़ालिब, जिसके इस शहर में हज़ारों दोस्त हैं, इस तनहाई और अकेलेपन में सिर्फ़ अपनी कलम के सहारे ही ज़िंदा बचा रह गया है। उसके सारे दोस्त एक-एक कर मार डाले गए। मेरी आत्मा में अब केवल दुख ही दुख है। मैं अपना बिस्तर और कपड़े बेच-बेचकर ज़िंदगी गुज़ार रहा हूँ। दूसरे लोग जिस तरह से रोटियाँ खाते हैं, मैं कपड़े खा रहा हूँ। डरता हूँ कि जब सब कपड़े खा लूँगा, तो नंगा ही भूखा मर जाऊँगा।

■ *ग़ालिब ने अपनी डायरी में लोगों की दरियादिली और हमदर्दी का मिसाल पेश किया है। ऐसे उदाहरण पाठ भाग में तलाशें।*

◆ *ग़ालिब*	◆ *भूखी मेहरुन्नीसा के घर रोटियाँ पहुँचाई।*
◆ *शिवजी राम*	
◆ *बालमुकुंद*	
◆ *हरिगोपाल 'तुफ्ता'*	

■ *हडसन साहब ने अभागे चिराग अली को मार दिया। इसपर एक समाचार तैयार करें।*

अनुबंध कार्य

■ *देश की आज़ादी के पीछे बहुत बड़ा इतिहास है। स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक घटनाओं पर विशेषांक तैयार करें।*

◆ **संबंध पहचानें :**

मेरा पड़ोसी हीरासिंह एक नौजवान है। वह मुझे हिम्मत बँधाता है।

◆ रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।

◆ इनके बीच का संबंध पहचानें।

◇ **यह कार्य करें :**

- तालिका के वाक्यों का विश्लेषण करें।
- वाक्यों में प्रयुक्त सर्वनामों को पहचानें।
- इन सर्वनामों से संबंधित संज्ञाओं को पाठ भाग से चुन लें।
- तालिका की पूर्ति करें।

वाक्य	सर्वनाम	संज्ञा
• अपनी-अपनी जान बचाकर वे भाग निकले। • मेरे जवाब से ब्राउन को खुशी हुई। • उसके पति की मौत को सात साल हुए हैं।		

मिर्ज़ा असद-उल्ला बेग खान 'ग़ालिब'

27 दिसंबर 1796 को उत्तर प्रदेश के आगरा में जन्म। उर्दू एवं फ़ारसी के महान शायर। मुगल काल के आखिरी शासक बहादुर शाह ज़फ़र के दरबारी कवि। 15 फरवरी 1869 को दिल्ली में मृत्यु।

दस्तंबू

सन् 1857 में भारत की पहली जनक्रांति हुई। हज़ारों निर्दोष व्यक्तियों को आज़ादी की इस लड़ाई में अंग्रेज़ों ने मार डाला। ग़ालिब उन दिनों दिल्ली में थे। अंग्रेज़ों के अत्याचारों को खुद उन्होंने देखा। तब उन्होंने एक डायरी लिखी थी 'दस्तंबू'। दस्तंबू में ग़ालिब ने 1857 में दिल्ली का हाल लिखा है। इसमें साधारण आदमी की मुसीबत और भूख तथा प्यास से तड़पते लोगों का भी ज़िक्र है। यह पाठ भाग 'दस्तंबू' से लिया गया है।

डॉ.कैलाश नारद

जन्म : 5 मई 1941 मध्यप्रदेश के जबलपुर में। साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में मशहूर व्यक्तित्व। आज़ाद भारत के अलावा उनके लेखों में परतंत्र भारत की भी तस्वीरें उकेरी गई हैं जिन्हें हमेशा ही ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया। प्रमुख रचनाएँ : अंधेरा, कितने फासलों तक, मरी हुई शताब्दी, एक खुशबू उठी सी, मध्यप्रदेश में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास आदि।

"आनेवाली पीढ़ियाँ बड़ी कठिनाई से विश्वास करेगी कि इस प्रकार का कोई रक्त-मांसवाला पुरुष इस दुनिया में जीवित रहा था।"

आल्बर्ट आइनस्टीन के इस कथन पर आपका विचार क्या है?

लेख

गांधीजी गांधीजी कैसे बने

स्वयंप्रकाश

क्या तुम एक ऐसे गांधीजी की कल्पना कर सकते हो जिन्होंने कुरता-पाजामा पहन रखा हो, जिनके पाँव में चप्पल और सर पर खूब सारे बाल और उनपर गांधी टोपी हो और जिन्होंने बच्चों के स्कूल बैग की तरह गले में झोला टाँग रखा हो! हाँ, गांधीजी जैसे फोटो में दिखते हैं वैसे हमेशा से नहीं थे। वे धीरे-धीरे गांधी बने। कैसे?

'वे धीरे-धीरे गांधी बने' इसका मतलब क्या है?

बचपन में गांधीजी को अंधेरे से डर लगता था। उन्हें लगता था कोई भूत आकर उन्हें पकड़ लेगा। बड़े होकर वे खुद ऐसे हो गए कि अंग्रेज़ हुकूमत उनसे डरने लगी– मानो वे कोई भूत हों! जब उन्हें काठियावाड़ हाई स्कूल में पहली कक्षा में भर्ती कराया गया तब उनकी उम्र थी ग्यारह साल और उन्हें जो विषय पढ़ाए जाते थे वे थे– इतिहास, भूगोल, गणित और अंग्रेज़ी। स्कूल की फीस थी आठ आने प्रति माह यानी पचास पैसे हर महीने। पहली परीक्षा में गांधीजी चौंतीस बच्चों में से बत्तीसवें स्थान पर रहे। और दो विषयों में तो उन्हें ज़ीरो मिला।

इंग्लैंड पढ़ने गए तो उनके लिए खूब सारे कपड़े सिलवाए गए। दक्षिण अफ्रीका में कुरता-धोती पहनने लगे और भारत आए तो एक बार मदुरै

गए भाषण देने। वहाँ एक औरत को देखा जो तालाब में अपनी धोती धो रही थी। लेकिन कैसे? आधी पहनती थी और बाकी आधी धोती थी। फिर धुली हुई को पहन लेती थी और शेष को धोती थी। उसकी हालत देखकर गांधीजी भीतर तक हिल गए और बस उसी समय उन्होंने फ़ैसला कर लिया कि अब सिर्फ़ एक धोती ही पहनूँगा। बाद में गोल मेज़ सम्मेलन के लिए लंदन गए। वहाँ तो खूब सर्दी पड़ती है... तो वहाँ के बच्चे पूछते थे, "बाबा! तुम्हारी पतलून कहाँ गई?" गांधीजी उन्हें कोई जवाब नहीं देते थे, बस हँसकर रह जाते थे। लेकिन जब रानी से मिलने गए तो रानी के दरबार में ऐसे जाना तो अदब-कायदे के खिलाफ़ था। तो किसीने पूछा कि इतने कम कपड़ों में दरबार में कैसे जाओगे? तो बोले, "फिकर मत करो! तुम्हारे राजा ने हम दोनों के बराबर कपड़े अकेले ही पहन रखे होंगे।"

औरत की हालत देखकर गांधीजी ने एक ही धोती पहनने का फैसला कर लिया। ऐसा फैसला लेने का उद्देश्य क्या था?

गांधीजी लिखते थे एक बढ़िया पैन से। वह पैन एक दिन चोरी चला गया। लिखने बैठे और पाया कि पैन तो है ही नहीं। उसी समय एक बच्चे ने अपनी पेंसिल दे दी कि लो बाबा इससे लिख लो! उन्होंने लिखकर देखा कि अरे वाह! इससे तो अच्छा लिखा जाता है और स्याही वगैरह भरने का झंझट भी नहीं! तो तय कर लिया कि अब पेंसिल से ही लिखेंगे। और पेंसिल से उन्होंने पहली चिट्ठी किसे लिखी जानते हो? भारत के वायसरॉय को!

लिखते-लिखते पेंसिल छोटी हो जाती तो उसपर कागज़ की भोंगली लगाकर धागे से बाँध लेते! दरअसल इन सबके पीछे कोई सनक नहीं बल्कि गांधीजी की यह सोच थी कि जब आपके देश के अधिकांश लोग गरीब हों तो आपको फिज़ूलखर्ची और दिखावा नहीं करना चाहिए। अगर आप सचमुच अपने देश और देशवासियों से प्यार करते हैं तो आपको कम से कम में काम चलाना चाहिए। और सादगी का महत्व समझना चाहिए। आप बड़े बनेंगे और कहाएँगे अपने विचारों से और अपने काम से, न कि

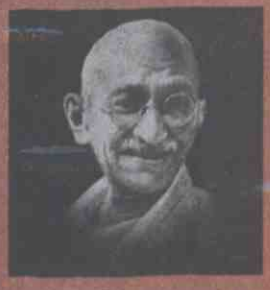

अपने कपड़ों से। एक बार तो उनकी प्रार्थना सभा में कुछ अमीर आदमी सज-धजकर आ गए तो गांधीजी ने उन्हें डाँट दिया। जैन धर्म में भी अपरिग्रह पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है। अपरिग्रह यानी फालतू की चीज़ें जमा मत करो! बस, गांधीजी को तो जहाँ भी कुछ अच्छा लगा, अपना लेते थे। तो उन्होंने अपरिग्रह को भी अपना लिया।

गांधीजी के तीन बंदर बहुत मशहूर हैं। यह दरअसल एक खिलौना था जो कुछ चीनी बच्चों ने गांधीजी को भेंट किया था, लेकिन गांधीजी ने उन्हें अपने जीवन का साथी बना लिया।

जब धोती पहननी शुरू कर दी तो जेब-घड़ी कहाँ रखें? तो उसे कमर में लटकाना शुरू कर दिया।

इस तरह गांधीजी धीरे-धीरे वैसे गांधीजी बन गए जैसा आजकल हम उन्हें उनके चित्रों में देखते हैं।

◆ **भाषण तैयार करें :**

- **'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' यह गांधीजी का कथन है। पाठ भाग के आधार पर इसका विश्लेषण करके भाषण तैयार करें।**

ये वाक्य पढ़ें :

- औरत तालाब में अपनी धोती धो रही थी।
- परीक्षा में गांधीजी चौंतीस बच्चों में से बत्तीसवें स्थान पर रहे।
- ये लोग कविता करते हैं।
- मेरे पड़ोस में एक गरीब औरत मेहरुन्नीसा रहती है।

- प्रत्येक वाक्य में रेखांकित शब्दों का आपसी संबंध पहचानें।
- तालिका के शब्दों से वाक्य बनाएँ :

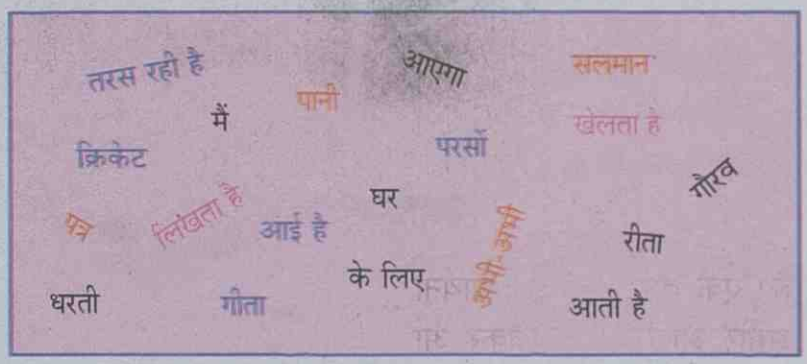

- _____
- _____
- _____
- _____
- _____

स्वयंप्रकाश

20 जनवरी 1947 में मध्यप्रदेश के इंदौर में जन्म। समकालीन हिंदी साहित्य जगत में अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिए विख्यात। प्रमुख रचनाएँ : सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी (कहानी संग्रह); जलते जहाज़ पर, बीच में विनय, उत्तर जीवन कथा (उपन्यास)। पहल सम्मान, राजस्थान साहित्य अकादमी सम्मान, आनंद सागर कथाक्रम सम्मान आदि से सम्मानित।

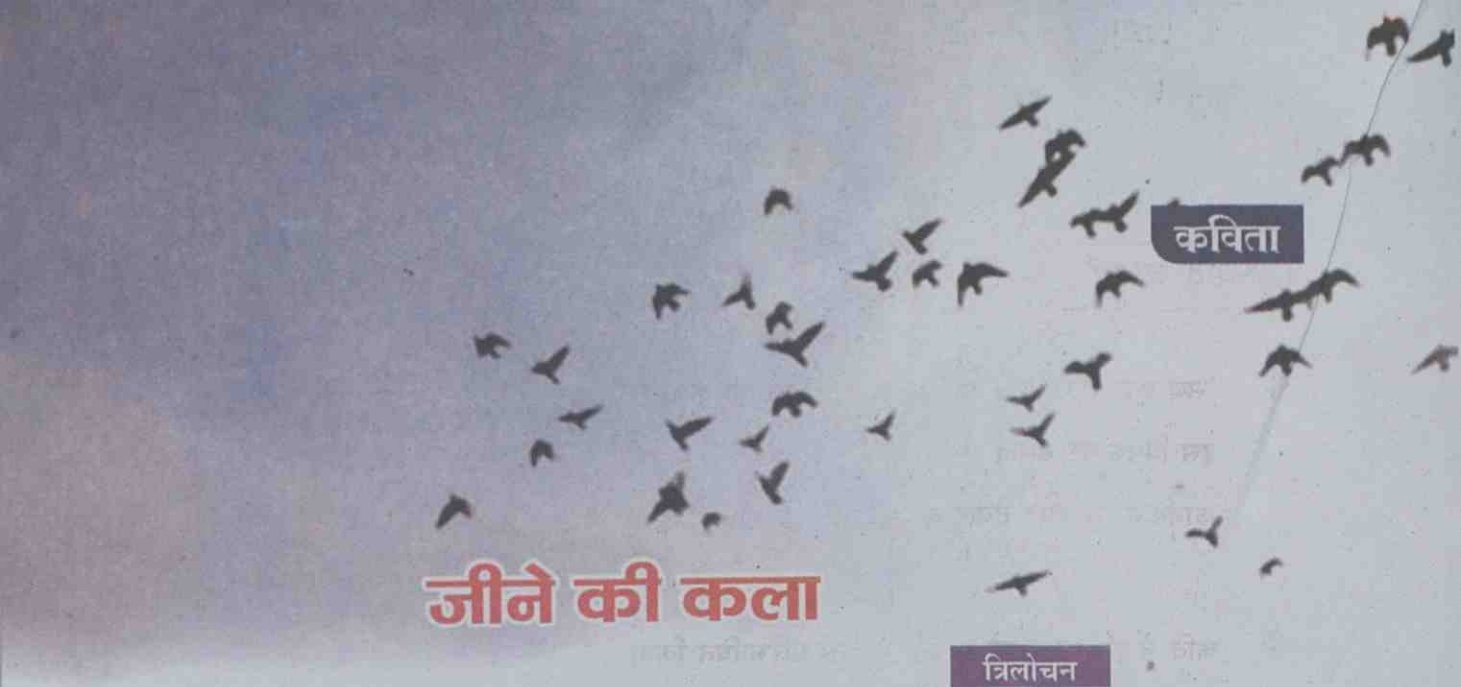

कविता

जीने की कला

त्रिलोचन

भूख और प्यास
आदमी से वह सब कराती है
जिसे संस्कृति कहा जाता है।

'भूख और प्यास आदमी से सब कराती है' -कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

लिखना, पढ़ना, पहनना, ओढ़ना,
मिलना, झगड़ना, चित्र बनाना, मूर्ति रचना,
पशु पालना और उनसे काम लेना
यही सारे काम तो इतिहास हैं
मनुष्य के सात द्वीपों और नौ खंडों में।
आदमी जहाँ रहता है उसे देश कहता है।
सारी पृथ्वी बँट गई है अनगिनत देशों में।
ये देश अनेक देशों का गुट बना कर
अन्य गुटों से अकसर मार काट करते हैं।

आदमी को गौर से देखो।
उसे सारी कलाएँ, विज्ञान तो आते हैं।
जीने की कला उसे नहीं आती।

'जीने की कला आदमी को नहीं आती' -क्यों?

संवाद चलाएँ :

- 'सब कुछ जानते हुए भी आदमी को जीने की कला नहीं आती।'
  इस विषय पर संवाद चलाएँ।
  कार्यक्रम पर रपट तैयार करें।

- कवि ने इन बातों को कविता में कैसे परिभाषित किया है?

संस्कृति	.....
इतिहास	.....
देश	.....

त्रिलोचन

उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर ज़िले में जन्मे त्रिलोचन शास्त्री का मूल नाम वासुदेव सिंह है। हिंदी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा का प्रमुख हस्ताक्षर। मुख्य काव्य संकलन : धरती, ताप के ताए हुए दिन, दिगंत, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, तुम्हें सौंपता हूँ, जीने की कला आदि। 'ताप के ताए हुए दिन' के लिए 1981 का साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1989-90 में हिंदी अकादमी का शलाका पुरस्कार आदि से सम्मानित।

जन्म : 20 अगस्त 1917
मृत्यु : 9 सितंबर 2007

अतिरिक्त वाचन के लिए

लेख

फूलों का शो

शिल्पी टॉस्टॉविन

दूर - दूर तक फूलों की चादर बिछी हुई थी। बेहद खूबसूरत नज़ारा था। मुझे दीवाली की याद हो आई। मैं और मेरी बहन सुबह से ही रंगोली बनाने में जुट जाते थे। कौन-सा डिज़ाइन बनाना है यह सोचना रात देर तक जगकर कर लिया जाता था। सुबह रंगोली बनाने से ही शुरू होती। आज भी वैसा ही लग रहा था। फर्क सिर्फ़ इतना था कि रंगोली हम सूखे रंगों से बनाते थे और यहाँ फूलों का इस्तेमाल किया गया था। तुम सोचोगे कि फूलों की रंगोली के बारे में लिखने जैसी क्या बात है। हाँ, इसमें सचमुच लिखने जैसी बात है। क्योंकि मैं एक छोटे-से डिज़ाइन की बात नहीं कर रही हूँ, मैं बात कर रही हूँ पुर्तगाल के अनूठे और बेहद खूबसूरत त्यौहार- फ्लावर फैस्टिवल के बारे में।

यह त्यौहार जून के महीने में मनाया जाता है। इस त्यौहार के कुछ दिन पहले से इसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। जब मैं वहाँ थी तो मैंने देखा कि दो-तीन दिन पहले ट्रक में तरह-तरह के फूल और पत्तियाँ भर-भरकर लाए जा रहे हैं। और इन्हें बड़ी-बड़ी खाली दुकानों में भरा जा रहा है। फिर मछुआरों के उस छोटे-से गाँव की औरतें, बच्चे, बुज़ुर्ग और जवान, सभी फूलों की पत्तियों को तोड़कर अलग-अलग ढेर बनाने में जुट गए थे। इतने सारे फूलों और पत्तियों को तोड़कर अलग करने में आमतौर पर 2-3 दिन लग जाते हैं।

जिस दिन यह त्यौहार होता है उससे पहली रात को सभी रास्ते बंद कर दिए जाते हैं ताकि सड़कों से गाड़ियाँ आ-जा न सकें। फिर बड़े प्रेम से सड़कों पर डिज़ाइन बनाया जाता है। इसके बाद शुरू होता है बहुत सुंदर फूलों और पत्तियों से सड़कों को सजाने का सिलसिला। किस रंग के फूल के साथ किस रंग के फूल या पत्ती

को बिछाना है इसका चुनाव बड़ी खूबसूरती से होता है। हमारे गाँव के खास स्मारकों के डिज़ाइन बनाकर भी उन्हें सजाया जाता है। पूरी रात जश्न का-सा माहौल रहता है। कोई चाय ला रहा है तो कोई सैण्डविच... सारा गाँव एक हो जाता है। बच्चों की खासतौर पर मस्ती होती है। वे बहुत मदद तो करते ही हैं। बुज़ुर्ग महिलाओं को देखकर लगता है जैसे उमर इनको ज़रा भी धीरे नहीं कर पाएगी। बड़े ही जोश के साथ इन के हाथ चलते हैं। शाम को जुलूस निकाला जाता है जिसमें घोड़ों पर जवान, चर्च के पादरी और बच्चे उन फूलों के ऊपर से निकलते हुए जाते हैं। फिर सभी लोग उन फूलों को एक-दूसरे पर उछालकर त्यौहार के सफल होने की खुशियाँ मनाते हैं। इस त्यौहार को मनाने की कहानी कुछ यूँ बताई जाती है–

बहुत समय पहले की बात है। तब पुर्तगाली सेना एक बहुत महत्वपूर्ण युद्ध के लिए तैयार हो रही थी। सभी जवान अपनी बंदूकें लिए कतार में खड़े थे। तभी एक बूढ़ी औरत अपनी फूलों की टोकरी के साथ वहाँ से निकली। वह सभी जवानों की बंदूकों के मुँह में एक-एक गुलाब का फूल यह कहकर डालने लगी कि हमें युद्ध नहीं शांति चाहिए। बस तभी से इस दिन को फूलों के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इसे देखने हज़ारों लोग दूर-दूर से आते हैं।

■ *किसी एक त्योहार की ऐतिहासिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लेख लिखें।*

मदद लें...

जिस गली में मैं रहता हूँ

गदर	-	ലഹള കലകം ಕಲಹ
भगदड़	-	പരിഭ്രമിച്ചുള്ള ഓട്ടം படபடப்புடன் ஓடுதல் ಪ್ರಯತ್ನದ ಓಟ
आहिस्ता-आहिस्ता	-	slowly மெதுவாக ಯು
बर्दाश्त करना	-	സഹിക്കുക பொறுத்துக் கொள் ಸಹಿಸು
शोरा बारूद	-	വെടിമരുന്ന് வெடிமருந்து ಪಟಾಕಿ
ज़हरीला	-	വിഷം കലർന്ന விஷம் கலந்த ವಿಷಮಿಶ್ರಿತ
घुसना	-	प्रवेश करना
पेश करना	-	ഹാജരാക്കുക to present ஆஜராகுதல் ಹಾಜರುಪಡಿಸು
सुर्ख	-	ചുവന്ന Red coloured சிவந்த ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ
हामी भरना	-	സമ്മതിക്കുക to agree சம்மதித்தல் ಒಪ್ಪುವುದು
इज़्ज़त	-	आदर ആദരവ് ஆதரவு ಗೌರವ
बेहद	-	അത്യധികമായ/അതിരറ്റ அளவற்ற ಯು
रिहा करना	-	മോചിപ്പിക്കുക release விடுதலை அடையைச்செய் ಸ್ವತಂತ್ರಗೊಳಿಸು

इज़ाज़त - അനുമതി consent அனுமதி ಅನುಮತಿ

हवालात - തടവ് custody சிறைப்படுத்துதல் ಸೆರೆ

कैदखाना - ജയിൽ சிறைச்சாலை ಕಾರಾಗೃಹ

बेशुमार - അസംഖ്യം countless எண்ணற்றாத ಅಸಂಖ್ಯ

बेगुनाह - നിരപരാധിയായ innocent களங்கமற்ற ನಿರಪರಾಧಿಯಾದ

ठूँसना - തിക്കി നിറയ്ക്കുക to cram அமுக்கித் திணிப்பது ತುಂಬಿತುಳುಕಿ

कदर - അളവ് quantity அளவு ಪ್ರಮಾಣ

हक़ीम - വൈദ്യൻ மருத்துவர் ವೈದ್ಯ

हाकिम - हुकुमत करनेवाला व्यक्ति

समाना - നിറയുക நிரம்புதல் ತುಂಬಿ

खुशकिस्मत - സൗഭാഗ്യമുള്ള lucky அதிர்ஷ்டமுள்ள ಸೌಭಾಗ್ಯವಿರುವ

भिश्ती - വെള്ളംചുമക്കുന്നവൻ தண்ணீர் எடுப்பவன் ನೀರನ್ನುಹೊರುವವ

नहर - തോട് canal வாய்க்கால் ಯು

मशक - വെള്ളമെടുക്കാനുള്ള തുകൽ സഞ്ചി A large leather water bag தண்ணீர் எடுப்பதற்கான தோல் பை ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿಸುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ

गुज़र-बसर करना - നിത്യവൃത്തി കഴിയുക/ഉപജീവനം നടത്തുക - அன்றாடப் பிழைப்பு ಉಪಜೀವನವನ್ನು ನಡಿಸು

तसल्ली - ആശ്വാസം/തൃപ്തി satisfaction மனநிறைவு ತೃಪ್ತಿ

हिम्मत बाँधना - ധൈര്യം സംഭരിക്കുക to muster courage தைரியம் அடை ಧೈರ್ಯತುಂಬುವುದು

शायरी करना	-	കവിത രചിക്കുക poetic composition காவியப்படைப்பு ಕವಿತಾರಚನೆ
बेरि	-	बिना तने का पौधा
फिक्र	-	വേവലാതി சிந்தனை ಚಿಂತೆ
किस्म	-	തരം kind வகை ರೀತಿ
दरियादिली	-	കാരുണ്യം கருணை ದಯೆ
हमदर्दी	-	സഹതാപം sympathy இரக்கம் ಅನುಕಂಬ
सुलगना	-	തീ കത്തുക to be kindled தீ பிடித்தல் ಅಗ್ನಿಗೆ ತುತ್ತಾಗು, ಬೆಂಕಿಹಿಡಿಯು
तनहाई	-	ഏകാന്തത தனிமை ಏಕಾಂತತೆ
गल्ला	-	ധാന്യം தானியம் ಧಾನ್ಯ

गांधीजी गांधीजी कैसे बने

अदन-कायदे	-	शिष्ट व्यवहार (മര്യാദ) மரியாதை ಮರ್ಯಾದೆ
अपरिग्रह	-	आवश्यकता से अधिक दान स्वीकार न करना
खिलाफ़	-	എതിര് எதிர் ವಿರೋಧ
धुली	-	To wash കഴുകി கழுவுதல் ತೊಳೆಯು
झंझट	-	तकलीफ़
झोला	-	थैला സഞ്ചി பை ಚೀಲ
डाँट	-	ശകാരം திட்டு ದಬಿಸು
धागा	-	thread ചരട്, നൂൽ கயிறு, நூல் ನೂಲು
पतलून	-	pants கால் சட்டை
फालतू	-	बेकार

फिकर - ചിന്ത சிந்தனை ಚಿಂತನೆ

फिजूलखर्ची अधिक या व्यर्थ का खर्च करनेवाला (निरर्थक)

भर्ती - Admission ചേരുക அனுமதி ಪ್ರವೇಶಾತಿ

भूगोल - ऐसा शास्त्र जिसमें पृथ्वी तल के ऊपरी स्वरूप का अध्ययन हो

ഭൂമിശാസ്ത്രം புவியியல் ಭೂಗೋಳಿಕ ಶಾಸ್ತ್ರ

भोंगली - भोंपा (फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का बाजा)

പെൻസിൽ പേപ്പർ ചുരുളുകളിലാക്കി ഉപയോഗിക്കുക

ಒಂದು ಪೆನ್ಸಿಲ್ ಮತ್ತು ಪೇಪ್ಪರ್ ಸುತ್ತಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು

सज-धजकर - सजावट, बनाव-शृंगार

लटकाना - തൂക്കിയിടുക தொங்கவிடு ತುದಿ ಹಾಕು

सनक - पागलपन

सादगी - ലാളിത്യം simplicity எளிமை ಸರಳತೆ

सिलाना - തയ്ക്കുക தைப்பது ಹೊಲಿಗೆ

स्याही - ink മഷി மை ಶಾಯಿ

हुकूमत - शासन ഭരണം ஆட்சி ಆಡಳಿತ

जीने की कला

अकसर - अधिकतर

इतिहास - ചരിത്രം History வரலாறு ಯು ಇತಿಹಾಸ

ओढ़ना - कपड़े से बदन ढकना

खंड - continent ഭൂഖണ്ഡം கண்டம் ಯು ಭೂಖಂಡ

गुर - समूह group குழு ಯು ಗುಂಪು

गौर - ध्यान, सोच-विचार

झगड़ना	-	to quarrel വഴക്കുണ്ടാകുക சண்டைபோடு యుపోట్టువాడు

फूलों का शो

बेहद	-	असीम
नज़ारा	-	दृश्य
जुट जाना	-	മുഴുകുക முழுகுதல்
अनूठा	-	विचित्र
पुर्तगाल	-	Portugal
जश्न	-	ഉത്സവം திருவிழா
खास तौर पर	-	വിശേഷിച്ചും/പ്രത്യേകിച്ചും expecially முக்கியத்துவம் வாய்ந்த / தனிப்பட்ட
उमर	-	उम्र age வயது
उछालना	-	വലിച്ചെറിയുക to throw up தூக்கி எறி

अधिगम उपलब्धियाँ

- *डायरी पढ़कर किसी घटना पर समाचार तैयार करता है।*
- *लेख पढ़कर संबंधित विषय पर भाषण प्रस्तुत करता है।*
- *कविता का विश्लेषण करता है और संवाद में भाग लेता है।*
- *लेख पढ़कर समान विषयों पर लेख लिखता है।*
- *सार्वनामिक शब्दों का प्रयोग करता है।*
- *कर्ता-क्रिया अन्विति समझकर वाक्य लिखता है।*

इकाई 3

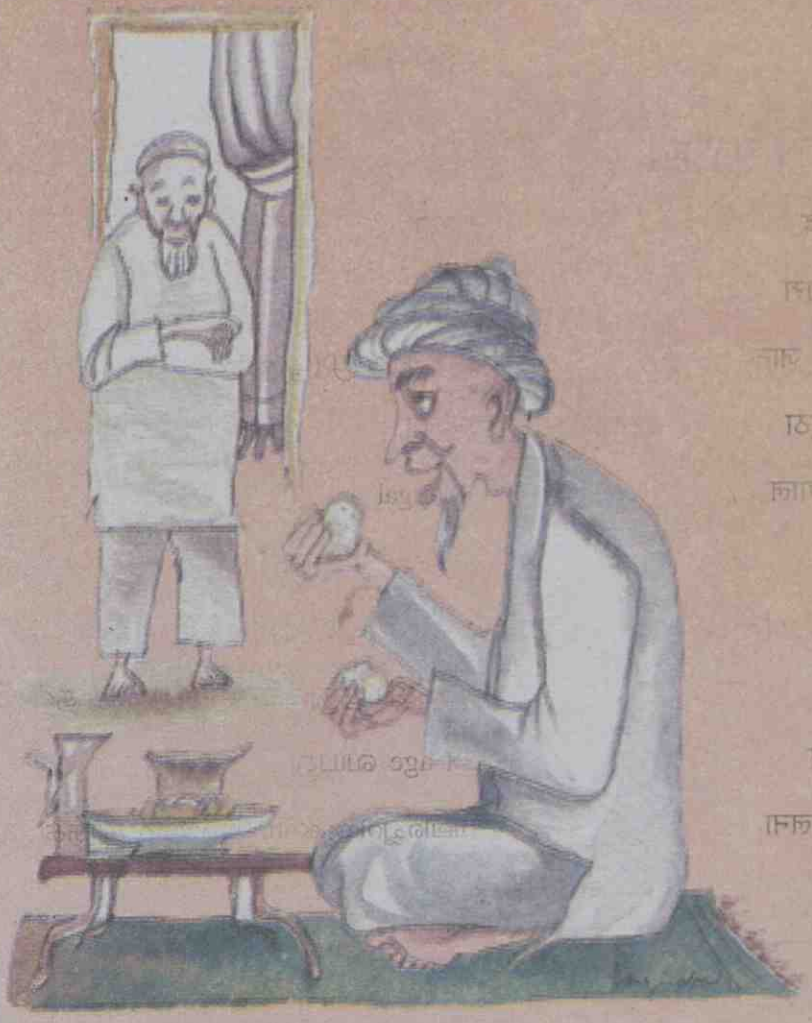

मज़बूरी

एक दावत में मुल्ला नसीरुद्दीन दोनों हाथों से खाना खा रहा था। किसीने टोका, "मुल्ला, यह क्या कर रहे हो? दोनों हाथों से खा रहे हो?"

"तीसरा हाथ जो नहीं है।" मुल्ला ने जवाब दिया।

- जीने के लिए कितने हाथों की ज़रूरत है?
- क्या कभी सोचा है जो बिना हाथ जीने को मज़बूर हैं?

नंगे पैर

वेंकटेश माडगुलकर

दोपहर का समय था। बेबी अपने पलंग पर बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी। बीच हॉल में रखे रेडियो में साढ़े बारह बजे के रिकॉर्ड बज रहे थे। शांत माहौल में गीतों के सुर गूँज रहे थे। सामने का बंद फाटक खोलकर पोस्टमैन भीतर आया। अहाते की बजरी पर उसकी आहट सुनाई दी। पोस्टमैन की आवाज़ उसके कानों में आई, पर फर्श पर डाक के गिरने की आवाज़ सुनाई नहीं दी। बेबी पीछे मुड़ी। सँभलकर पलंग से उतरी। फिर बैसाखियों के सहारे एक-एक कदम चलकर दरवाज़े तक आई। बंद दरवाज़ा खोलने में उसे थोड़ा समय लगा। दरवाज़े से बाहर और हॉल को पारकर आगे आने में देर लगी। वह दरवाज़े पर पहुँची। वहाँ हाथ में डाक लिए पोस्टमैन खड़ा था। फर्श पर डाक फेंककर अभी गया नहीं था।

'बंद दरवाज़ा खोलने में उसे थोड़ा समय लगा। दरवाज़े से बाहर और हॉल को पारकर आगे आने में देर लगी।' देर लगने का क्या कारण है?

सीढ़ियों के ऊपर होकर उसने हाथ बढ़ाया। उसने ध्यान दिया कि आज पोस्टमैन दूसरा ही है। सदा का वह दाढ़ी वाला पोस्टमैन नहीं है। बच्चों के से चेहरे वाला यह नया पोस्टमैन है।

उसने एक नज़र बेबी के पैरों की ओर देखा। उसे शायद धक्का-सा लगा। उसने डाक बेबी के हाथ में दे दी। बूढ़े पोस्टमैन की तरह इस पोस्टमैन ने उससे

कोई बात न की। माँ के हाथ में डाक देकर बेबी पीछे की ओर मुड़ी ओर बड़ी कुर्सी पर बैठकर बोली, "माँ, आज का पोस्टमैन नया था।"

"तो, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है? बदल गया होगा।"

बेबी की माँ ने बालमित्र का नया अंक बेबी के आंचल में रखा। फिर रेडियो बंद करके वह अपने कमरे में चली गई। दोपहर में बेबी को हमेशा अकेलापन लगता। वह किसके साथ बात करे? किसके साथ हँसे? यह प्रश्न सदा हीं बना रहता। ऐसे ही समय में वह बूढ़ा पोस्टमैन आ जाया करता। वह हमेशा ही जल्दी में रहता, फिर भी कभी-कभी खिड़की तक जाकर डाक देता। कोई न कोई परिचित आया देखकर बेबी को अच्छा लगता।

'दोपहर में बेबी को अकेलापन लगता...' बेबी बाहर निकल न पाती। जो अकेलापन सहते हैं, वे हमसे क्या-क्या चाहते होंगे?

इसके बाद तीसरे दिन फिर पोस्टमैन की आवाज़ आई। डाक गिरने की आवाज़ नहीं सुनाई दी। चलती हुई बेबी अहाते में आई। पोस्टमैन अभी खड़ा था। बेबी की ओर देखकर वह मुस्कराया। बेबी भी हँसी। डाक लेकर बेबी ने पूछा, "क्या तुम नए पोस्टमैन हो?"

"जी, हाँ।"

"डाक फेंककर तुम चले जाया करो। मुझे आने में देर लगती है।"

पोस्टमैन ने बेबी के पैरों की ओर देखा और देर तक मौन रहा। इस लड़की को भगवान ने पैर क्यों नहीं दिए? ऐसा शायद उसे लगा होगा। वह कुछ बोला नहीं, पर उसकी आँखों से कुछ यही भाव झलका।

उसने बहुत ही कोमल तथा दबी आवाज़ में कहा, "लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है- अहाते में फैंकने का नहीं!"

'लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है- अहाते में फैंकने का नहीं!' यहाँ कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

वह बोल रहा था, तब बेबी ने उसके पैरों की ओर देखा। कितने मज़बूत और गोल-गोल... इस पोस्टमैन के पैर कितने अच्छे थे। अचानक बेबी के ध्यान में आया कि ये अच्छे पैर नंगे हैं। इसने पैरों में कुछ पहना क्यों नहीं?

पोस्टमैन लौट गया। सुंदर पग धरते हुए चला गया। बेबी ने सोचा कि कदाचित उसके जूते फट गए होंगे, वे मरम्मत होकर आते होंगे।

थोड़ी देर के लिए ही सही, इस तर्क से बेबी को अच्छा लगा। डाक लेकर वह कुर्सी पर बैठ गई। पोस्टमैन के नंगे पैर उसके मन से धीरे-धीरे चले गए।

जाड़ा गया और गर्मी आई। धूप कुछ तेज़ पड़ने लगी थी। कोलतार की सड़क तपने लगी थी। पर पोस्टमैन आता। उसके पास छाता नहीं, साइकिल नहीं और जूता भी नहीं था। धूप से उसका चेहरा लाल-पीला होता। पसीने से उसकी कमीज़ पीठ से चिपकी रहती। सूखे अधरों पर वह ज़बान फिराकर लजीली हँसी हँसता और डाक देकर लौट जाता, धूप से जलते, नंगे पैर घूमता रहता।

उसने माँ से पूछा, "माँ, वह पोस्टमैन नंगे पैर ही क्यों घूमता है?"

माँ ने कहा, "चैन से कोई नंगे पैर घूमेगा, बेटी? पैरों में डालने के लिए उसे मिलता न होगा।"

बेबी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह उस पोस्टमैन को नंगे पैर चलने नहीं देगी। यह तय करते ही उसे सुखद अनुभूति हुई।

'बेबी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह उस पोस्टमैन को नंगे पैर चलने नहीं देगी। यह तय करते ही उसे सुखद अनुभूति हुई' --कारण क्या होगा?

हमेशा आने वाला मोची जब घर आया, तब बेबी ने उसे पास बुलाया और पाँच रुपया उसके हाथ में देकर धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे इसके जूते बना दो।"

हरीबा ने सिर हिलाकर कहा, "बना दूँगा, बहिन! नाप ले लूँ?" वह बोली, "अरे मेरे पैर का नहीं।" "फिर किसके लिए?" हरीबा ने पूछा।

इस प्रश्न को सुनकर बेबी एक उलझन में पड़ गई। उसको लगा कि मानो अब सारा खेल बिगड़ने जा रहा था। अंत में, प्रतीक्षा करते हुए मोची को उसने कहा, "दो दिन के बाद आओ,

हरीबा! मैं माप दूँगी।"

दूसरे दिन पोस्टमैन आया और थोड़ी देर तक एक-एक कर डाक देकर चला गया। डाक को कुर्सी पर रखकर बेबी अहाते के किनारे आई और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। फिर फ्रॉक की जेब से परकार निकालकर जाने वाले पोस्टमैन के पैरों के निशान का नापजोख किया। पैरों की गोलाई आदि का ठीक-ठीक माप। माप लेकर वह फिर कमरे में आ गई।

हरीबा मोची को काम मिला। उसने हिसाब से जूते तैयार किए और बेबी को लाकर दे दिए। तब होली का त्यौहार मनाया जा चुका था। दोपहर को पोस्टमैन कब आएगा, इसकी प्रतीक्षा करती हुई बेबी बैठ गई।

'तब होली का त्योहार मनाया जा चुका था।' -इस प्रस्ताव का तात्पर्य क्या है?

दोपहर को पोस्टमैन आया और बेबी के आने की राह देखने लगा। धीरे-धीरे बेबी आई और पुराने अखबार में लिपटा एक बंडल लेकर अहाते में खड़ी हो गई।

हमेशा की तरह वह मुस्कराया और पत्रों का गट्ठा उसने बेबी के हाथ में दे दिया।

बेबी ने टोका, "अजी, तुमने होली का उपहार नहीं माँगा।" पोस्टमैन ने कहा, "माँगूँगा बहिनजी, साहब से भेंट नहीं हो रही है।" यह सुनते-सुनते बेबी ने पोस्टमैन के हाथ में जूते का बंडल थमा दिया। अचरज से सकपकाकर उसने बंडल खोला। भीतर एक जोड़ी सुंदर जूते थे। पोस्टमैन मन ही मन कह उठा, "इस बच्ची ने तो मुझ नंगे

पैर को जूते दिए। उसके पैर नहीं हैं, वो मैं कैसे दे सकूँगा?"

काम खत्म करके वह सीधा पोस्ट ऑफिस गया। बड़े बाबू के टेबल के सामने जाकर बोला, "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।"

'साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली दीजिए' -ऐसा क्यों कहा होगा?

◆

◆ 'पोस्टमैन की आवाज़ उसके कानों में आई, पर फर्श पर डाक गिरने की आवाज़ सुनाई नहीं दी। बेबी पीछे मुड़ी। सँभलकर पलंग से उतरी। फिर बैसाखियों के सहारे एक-एक कदम चलकर दरवाज़े तक आई।'

◆ बेबी हर बात का सूक्ष्म निरीक्षण करती है। उसके मुताबिक व्यवहार भी करती है।

जैसे,

पोस्टमैन की आवाज़ उसके कानों में आई, पर डाक के गिरने की आवाज़ सुनाई नहीं दी।	बेबी बैसाखियों के सहारे दरवाज़े तक आई।

◆ **लिखें, इनपर आपकी प्रतिक्रिया।**

◆ रसोई से खाने की महक आ रही है।	.....
◆ दस्तक देने की आवाज़ आ रही है।	.....
◆ स्कूल में घंटी लंबी बज रही है।	.....
◆ बादलों के गरजने की आवाज़ आ रही है।	.....
◆ कोई दोस्त पुकार रहा है।	.....

◆ **डायरी लिखें :**

◆ *'बेबी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह उस पोस्टमैन को नंगे पैर चलने नहीं देगी। यह तय करते ही उसे सुखद अनुभूति हुई।'* **सोचें, उस दिन बेबी के मन में कौन-कौन-से विचार आए होंगे? बेबी के विचारों को डायरी के रूप में लिखें।**

◆ **टिप्पणी लिखें :**

◆ 'नंगे पैर' शीर्षक इस कहानी के लिए कहाँ तक सार्थक है? अपना मत स्पष्ट करते हुए एक टिप्पणी लिखें।

◆ **इस वाक्य पर ध्यान दें–**

'पैरों की गोलाई आदि का ठीक-ठीक माप।'

◆ इसमें 'गोलाई' शब्द 'गोल' और 'आई' के मेल से बना है। ध्यान दें, इससे अर्थ में कौन-सा परिवर्तन आता है। इस तालिका में इसी प्रकार के और कुछ शब्दों को जोड़ें।

विशेषण	प्रत्यय	संज्ञा
गोल	आई	गोलाई
चतुर	आई	.....
सुंदर	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

◆ **सोचें...**

- 'नंगे पैर' कहानी की बेबी घर के अकेलेपन में रहने को क्यों मज़बूर है?
- इसी कहानी का नया पोस्टमैन क्यों नंगे पैर चलता है?
- अपनी विवशताओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए?

वेंकटेश माडगुलकर

प्रमुख मराठी रचनाकर। देहाती जीवन के यथार्थपरक लेखन केलिए विख्यात। आठ उपन्यासों, दो सौ से अधिक कहानियों, चालीसों से ज़्यादा पटकथाओं, कुछ लोकनाट्यों तथा यात्राविवरणों से संपन्न है आपका रचना-संसार। प्रमुख रचनाएँ हैं– माणदेशी माणसे, बानगरवाड़ी आदि। आपकी मुख्य रचनाओं का अनुवाद अंग्रेज़ी, जर्मन तथा एकाधिक भारतीय भाषाओं में हुआ है।

जन्म : 1927, माड़गुल गाँव महाराष्ट्र

मृत्यु : 2001

कविता

छिप-छिप अश्रु बहानेवालो

गोपालदास नीरज

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो, मोती व्यर्थ लुटानेवालो
कुछ सपनों के मर जाने से, जीवन नहीं मरा करता है।

'मोती व्यर्थ लुटाना' -से क्या तात्पर्य है?

सपना क्या है, नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी
गीली उमर बनाने वालो, डूबे बिना नहानेवालो
कुछ पानी के बह जाने से, सावन नहीं मरा करता है।

'डूबे बिना नहाना' -से आपने क्या समझा?

माला बिखर गई तो क्या है
खुद ही हल हो गई समस्या
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई तपस्या
रूठे दिवस मनानेवालो, फटी कमीज़ सिलानेवालो
कुछ दीपों के बुझ जाने से, आँगन नहीं मरा करता है।

'रूठे दिवस' और 'फटी कमीज़'-से क्या तात्पर्य है?

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती
वस्त्र बदलकर आनेवाले! चाल बदलकर जानेवालो!
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

'पहने सुबह धूप की धोती' -का क्या मतलब है?

लाखों बार गगरियाँ फूटीं,
शिकन न आई पनघट पर,
लाखों बार किश्तियाँ डूबीं,
चहल-पहल वो ही है तट पर,
तम की उमर बढ़ानेवालो! लौ की आयु घटानेवालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

यहाँ 'पतझर' -का जीवन से क्या संबंध है?

लूट लिया माली ने उपवन,
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर,
खिड़की बंद न हुई धूल की,
नफ़रत गले लगानेवालो! सब पर धूल उड़ानेवालो!
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

'नफ़रत गले लगानेवाला' -कौन हो सकता है?

- **कविता के प्रत्येक छंद की अंतिम पंक्ति विशेष ताल-क्रम में है। इसी ताल-क्रम में कुछ पंक्तियाँ रचें।**
- **'छिप-छिप अश्रु बहानेवालो' कविता का भाव लिखें।**

गोपालदास नीरजः (जन्म 4 जनवरी 1925, ग्राम पुरावली, ज़िला इटावा, उत्तरप्रदेश) हिंदी अध्यापन से लेकर कवि सम्मेलन के मंचों पर एक अलग ही अंदाज़ में काव्य वाचन और फ़िल्मों में गीत लेखन के लिए जाने जाते हैं। वे पहले व्यक्ति हैं जिन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारत सरकार ने दो-दो बार सम्मानित किया, पहले पद्मश्री से, उसके बाद पद्म भूषण से। यही नहीं फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिए उन्हें लगातार तीन बार फ़िल्म फ़ेयर पुरस्कार भी मिला।

प्रमुख रचनाएँः दर्द दिया है(पुरस्कृत), आसावरी(सचित्र), मुक्तकी (सचित्र), लिख-लिख भेजत पाती(पत्र संकलन), पंत कला, काव्य और दर्शन(आलोचना)

व्यंग्य लेख

अतिरिक्त वाचन के लिए

अंदर के और बाहर के

विंदा करंदीकर

मुझे अब ऐसा लगता है कि आदमी की असल में दो ही जातियाँ हैं: 'अंदर के' और 'बाहर के'। इस विचार की हलचल मेरे मन में बीते कितने महीनों से चल रही थी। पर परसों ट्रेन से पूना से आते समय जो मार्मिक अनुभव मुझे हुआ उससे यह स्पष्ट हो गया।

स्टेशन पहूँचने की मुझे जल्दी थी। पहले ही देर हो गई थी। पर मैं अंदर घुसूँ इससे पहले गाड़ी की सीटी की ज़ोरदार आवाज़ हुई। ऐसे वक्त अपने मन की स्थिति बड़ी अजीब होती है। सीटी किसी भी गाड़ी की क्यों न हो लगता है जैसे अपनी ही गाड़ी की है। पैरों में जूते होने से दौड़ना भी आसान न था। ऐसे में लगभग दौड़ने जैसा तेज़-तेज़ चलते हुए मैंने ट्रेन का दरवाज़ा पकड़ा। मैं उसे खोलने की कोशिश करूँ इससे पहले अंदर के लोगों का शोर हुआ, "अरे साहब! यह सेकंड का डब्बा है। आगे जाओ।"

मज़ेदार बात है ना– अंदर के लोगों को बाहर के सारे लोग थर्ड क्लास के ही लगते हैं।

इतने में दूसरा बोला, "अरे, अगले डिब्बे में इतनी जगह है। पूरा खाली है। फिर यहाँ क्यों घुसे आ रहे हो? अगला डिब्बा पूरा खाली है! उधर जाओ।" अंदर के लोगों को खुद का डिब्बा छोड़कर बाकी सब अगले डिब्बे हमेशा खाली दिखते हैं!

पर उसी दरवाज़े से चिपके रहने के सिवा मेरे पास कोई और चारा न थ । मैं दरवाज़ा खोलने की कोशिश कर रहा था और 'अंदर के' लोग मेरा विरोध कर रहे थे। उनकी भी गलती न थी। गाड़ी में भयानक भीड़ थी। दरवाज़ा खोलना तक

मुश्किल था। ऐसे में दरवाज़े से चिपककर खड़े एक लंबे-चौड़े आदमी ने द्वारपाल का काम पूरी निष्ठा से निभा रखा था। अंदर के लोग उसकी तारीफ़ कर रहे थे। इससे उसमें विजेता होने के भाव आ रहे थे।

आखिरकार दरवाज़े का मोर्चा छोड़कर मैंने भेदने की नीति से खिड़की से हल्ला किया। बिस्तर अंदर फेंका। कूदकर सिर खिड़की के अंदर ठूँसा और पैर उठाकर खुद का त्रिशंकु कर दिया! मेरी ये हालत देखकर अंदर के लोगों को मुझपर दया आ गई। गाड़ी चलने लगी थी और मैं अंदर खींच लिया गया था। और अब उस महाकाय द्वारपाल के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा था।

पर आश्चर्य की बात यह है कि मेरे अंदर आने के दस मिनट के भीतर ही मेरा कायापलट हो गया। द्वारपाल पर आया गुस्सा भी जल्दी ही खत्म हो गया। हम पुराने दोस्तों की तरह गप्पें मारने लगे थे। उसके दिए केले मैंने खाए। मेरी सिगरेट उसने पी। और बाद में हम दोनों अपने-अपने विस्तर जोड़कर उस पर पसर गए। बाहर मैं उसका सिर फोड़ने का विचार कर रहा था। पर अब उसी की टोली में शामिल हो गया था। मेरी जात बदल गई थी।

अगले स्टेशन पर यात्रियों की एक और टोली हमारे डिब्बे में घुसने लगी। हम दोनों ने उनके विरुद्ध एक संयुक्त हल्ला बोल दिया। और 'अंदर के' लोगों के हितों की 'बाहरी लोगों' से रक्षा में जुट गए। बाहरवाला जब अंदरवाला हो जाता है तो वो कितना बदल जाता है– इसका मुझे पहली बार अहसास हुआ।

'बाहरवाला जब अंदरवाला हो जाता है तो वो कितना बदल जाता है। इसका मुझे पहली बार अहसास हुआ।' कहानी का नायक अपनी रेल यात्रा के दौरान ऐसा महसूस करता है। इसी प्रकार का कोई अनुभव आपका है? पेश करें।

विंदा करंदीकर

आपका जन्म 23 अगस्त 1917 को हुआ। आप मराठी के महान कवि हैं। आप मराठी साहित्य में भारत के सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार ज्ञानपीठ से नवाज़ा गए थे। आपने महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू की कविताओं का अनुवाद किया था।

मदद लें...

नंगे पैर

अंक	-	संख्या
अचरज	-	आश्चर्य
अहाता	-	चारदीवारी
कोलतार	-	अलवतरा, (एक गाढ़ा तरल पदार्थ जो सड़क बिछाने में काम आता है)
झलका	-	चमक
टोका	-	ഇടയിൽ കയറി സംസാരിക്കുക குறிக்கிட்டுப் பேசுவது
नापजोख	-	नापना
पग	-	पैर
परकार	-	नापने आदि का उपकरण
पलंग	-	चारपाई
फाटक	-	बड़ा दरवाज़ा
बजरी	-	ചരൽ சரல் கற்கள்
बैसाखी	-	लंगड़े लोगों के चलने के लिए एक प्रकार का डंडा
माहौल	-	वातावरण
मोची	-	जूता सीनेवाला
राह देखना	-	प्रतीक्षा करना
लाल-पीला होना	-	क्रोध में आना
सकपकाकर	-	चकित होकर

अंदर के और बाहर के

हलचल	-	उथल-पुथल കുഴഞ്ഞു മറിയൽ தளர்ந்து விழுதல் ಕುಸಿದುಬೀಳು
घुसना	-	प्रवेश करना
खुद	-	स्वयं
चिपकना	-	सटना പറ്റിച്ചേരുക ஒட்டிக்கொள்வது ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳು

तारीफ़ - പ്രശംസ பாராட்டு ಪ್ರಶಂಸ
चारा - ഉപായം/മാർഗം தந்திரம் / வழி ಉಪಾಯ
हल्ला करना - ബഹളം ഉണ്ടാക്കുക சத்தம் போடு ಪೆಟ್ಟುಮಾಡುವುದು
ठूँसना - ബലമായി പ്രവേശിപ്പിക്കുക. to penetrate by force. கட்டாயமாக நுழைய வைப்பது ಬಲವಾಗಿಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು
मोर्चा - लड़ाई ഉന്തും തള്ളും to fight the enemy உந்தியும், தள்ளியும் ತಳ್ಳುವುದು
पसरना - लेटना
टोली - समूह
अहसास - തോന്നൽ எண்ணம், தோன்றுதல் ಉಹಿಸು
राह - रास्ता
टोकना - ചോദ്യം ചെയ്യുക, to intrograte கேள்வி கேட்பது ಪ್ರಶ್ನಿಸು
थमना - തടയപ്പെടുക, to be prevented தடுத்தல் ತಡೆಹಿಡಿಯುವ
अचरज - आश्चर्य ആശ്ചര്യം/അത്ഭുതം ஆச்சரியம் / அற்புதம் ವಿಶ್ಮರ್ಯ
सकपकाना - അമ്പരക്കുക, to be confounded பிரமித்தல் ಆಶ್ಚರ್ಯಗೊಳ್ಳು.
बेधड़क - നിർഭയമായി பயமற்ற ನಿರ್ಭಯದಿಂದ
आखिर - अंत में

छिप-छिप अश्रु बहानेवालो

सेज - शय्या
नहाना - स्नान करना
सावन - श्रावण
'गर - अगर
बिखरना - तितर-बितर होना
खुद - स्वयं
हल - परिहार
आँसू - अश्रु

खोना	-	नष्ट होना
जिल्द	-	किताब का आवरण
पोथी	-	किताब
चंद	-	कुछ
गगरी	-	मिट्टी का छोटा घड़ा
शिकन	-	लहरी
किश्ती	-	छोटी नाव
चहल-पहल	-	कोलाहल
तट	-	किनारा
तम	-	अंधेरा
लौ	-	ज्वाल
घटाना	-	कम करना
पतझर	-	शिशिर
तूफ़ान	-	तेज़ चलती हवा
नफ़रत	-	घृणा
मुखड़ा	-	चेहरा
नाराज़ी	-	क्रोध

अधिगम उपलब्धियाँ

- *कहानी के मार्मिक प्रसंग पर डायरी लिखता है।*
- *अपना मत व्यक्त करते हुए टिप्पणी लिखता है।*
- *पढ़ी हुई कविता के ताल-क्रम पर पंक्तियाँ जोड़ता है।*
- *कविता का भाव लिखता है।*
- *विशेषण के साथ प्रत्यय जोड़कर संज्ञा शब्दों का निर्माण करता है।*

इकाई 4

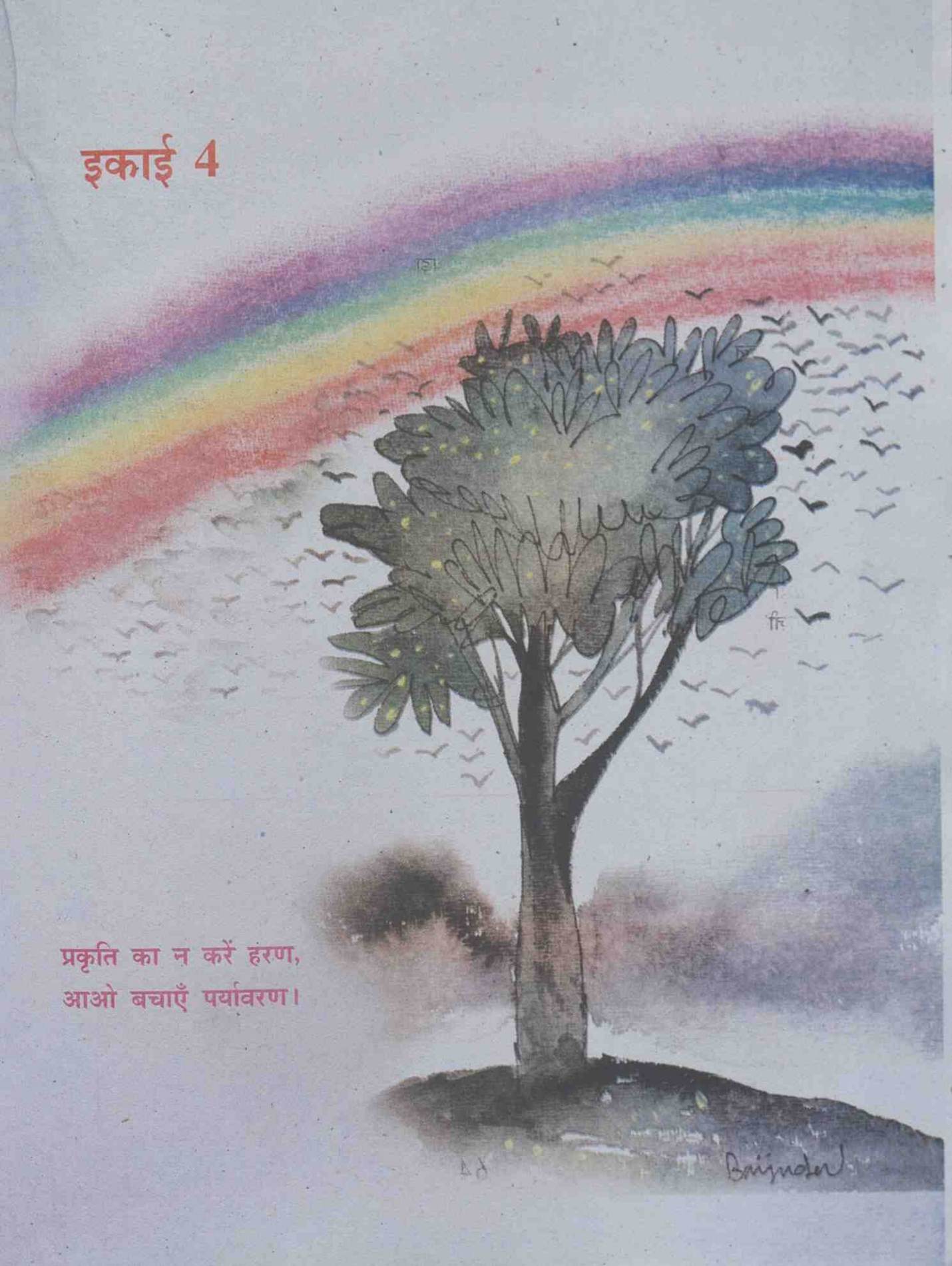

प्रकृति का न करें हरण,
आओ बचाएँ पर्यावरण।

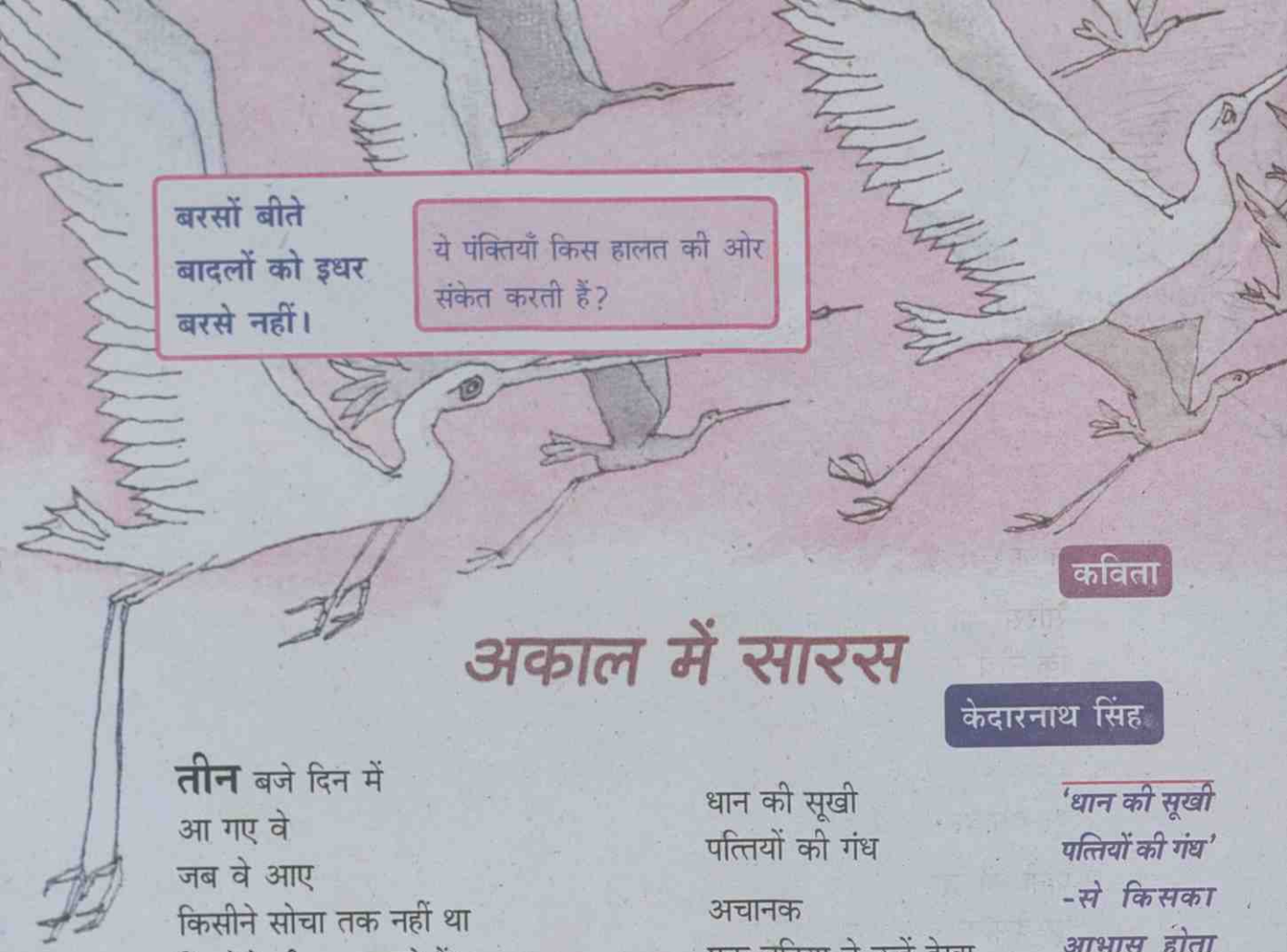

बरसों बीते
बादलों को इधर
बरसे नहीं।

ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर संकेत करती हैं?

कविता

अकाल में सारस

केदारनाथ सिंह

तीन बजे दिन में
आ गए वे
जब वे आए
किसीने सोचा तक नहीं था
कि ऐसे भी आ सकते हैं सारस

एक के बाद एक
वे झुंड के झुंड
धीरे-धीरे आए
धीरे-धीरे वे छा गए
सारे आसमान में
धीरे-धीरे उनके क्रेंकार से भर गया
सारा का सारा शहर

वे देर तक करते रहे
शहर की परिक्रमा
देर तक छतों और बारजों पर
उनके डैनों से झरती रही
धान की सूखी
पत्तियों की गंध

अचानक
एक बुढ़िया ने उन्हें देखा
ज़रूर ज़रूर
वे पानी की तलाश में आए हैं
उसने सोचा

वह रसोई में गई
और आँगन के बीचोंबीच
लाकर रख दिया
एक जलभरा कटोरा

लेकिन सारस
उसी तरह करते रहे
शहर की परिक्रमा
न तो उन्होंने बुढ़िया को देखा

'धान की सूखी पत्तियों की गंध' -से किसका आभास होता है?

न जलभर कटोरे को

सारसों को तो पता तक नहीं था
कि नीचे रहते हैं लोग
जो उन्हें कहते हैं सारस

पानी को खोजते
दूर-देसावर से आए थे वे

पानी को खोजते
दूर-देसावर तक जाना था उन्हें

सो, उन्होंने गर्दन उठाई
एक बार पीछे की ओर देखा
न जाने क्या था उस निगाह में
दया कि घृणा
पर एक बार जाते-जाते
उन्होंने शहर की ओर मुड़कर
देखा ज़रूर

फिर हवा में
अपने डैने पीटते हुए
दूरियों में धीरे-धीरे
खो गए सारस

सारसों ने जलभर कटोरे को क्यों न देखा होगा?

सारसों ने जाते-जाते शहर की ओर क्यों मुड़कर देखा होगा?

- **तुलना करें :**
  - 'तीन बजे दिन में
    आ गए वे।'
  - वे दिन में तीन बजे आ गए।
  - कवितांश की संरचना और वाक्य की संरचना का अंतर पहचानें।
  - कविता को गद्य में बदलने पर शब्दों के क्रम में क्या परिवर्तन आया है?
- **इन पंक्तियों को गद्य की संरचना में बदलकर लिखें।**

पंक्तियाँ	वाक्य
एक के बाद एक वे झुंड के झुंड धीरे-धीरे आए। वे देर तक करते रहे शहर की परिक्रमा।	

- **लेख लिखें :**
  - प्रकृति के जल-स्रोतों का नाश होता जा रहा है।
  - साथ ही पर्यावरण का संतुलन भी बिगड़ रहा है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए 'अकाल में सारस' कविता की व्याख्या कर लेख लिखें।

केदारनाथ सिंह

आपका जन्म 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िला के चकिया गाँव में हुआ। वे अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' के कवि हैं। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा उन्हें वर्ष 2013 का 49वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। प्रमुख रचनाएँ: अभी बिल्कुल अभी, ज़मीन पक रही है, बाघ, तालस्ताय और साईकिल, सृष्टि पर पहरा, ताना-बाना, मेरे समय के शब्द आदि...

बात बड़ी है पुरानी
थी प्रकृति की भी कहानी
आज आपको भी है सुनानी...

प्रकृति की कहानी क्या है?

पत्र

संसार पुस्तक है

जवाहरलाल नेहरू

अनुवादक : प्रेमचंद

जब तम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का, और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

'अगर तुम्हें इस दुनिया का... तुम पैदा हुई हो' -इससे आपने क्या समझा?

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में मैं बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें

आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनंद मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है, और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों के पहले सिर्फ़ जानवर थे, और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस ज़माने का ख्याल करना भी मुश्किल है जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जाननेवालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इसपर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था; किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती, क्योंकि हम जो चीज़ चाहते सोच लेते, और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाय वह कैसे ठीक हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि

'लेकिन जो कहानी ... वह ठीक कैसे हो सकती है?' -निराधार कहानी को सच माननेवालों की मानसिकता पर आपका विचार क्या है?

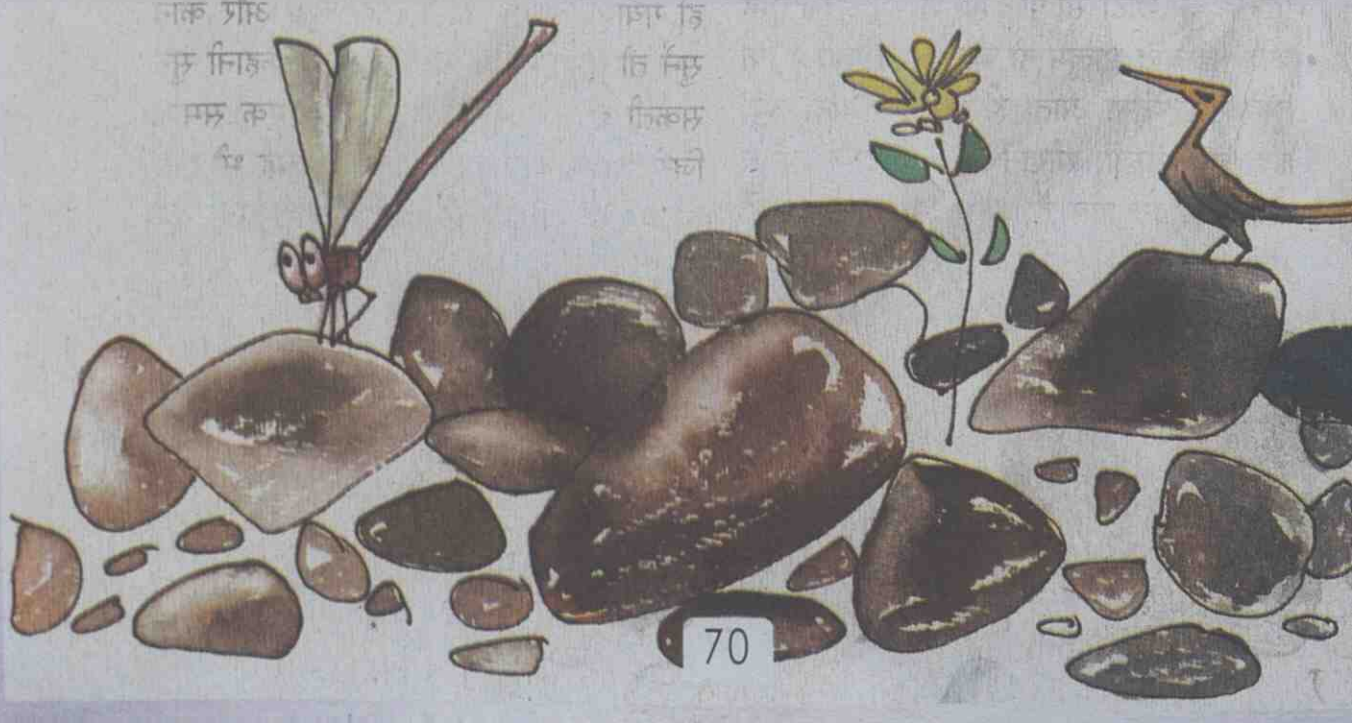

उस पुराने ज़माने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और भी इसी तरह की और कितनी ही चीज़ें वे किताबें हैं जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीक़ा यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मज़े की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई ज़बान, उर्दू, हिंदी या अंग्रेज़ी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसीके मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की

'इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे' –इसका मतलब क्या है?

तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे-से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच में वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक जर्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिसपर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते।

अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीज़ों से, जो हमारे चारों तरफ़ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

◆

जवाहरलाल नेहरू

*जन्म : 14 नवंबर 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में। आप भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में थे। 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद वे भारत के प्रधानमंत्री बने और मृत्युपर्यंत इस पद पर बने रहे। जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक का प्रेमचंद द्वारा हिंदी में अनुवाद किया गया था। ये पत्र **'लेटर फ्रम ए फ़ादर टु हिस डॉटर'** नेहरूजी ने अपनी बेटी इंदिरा प्रियदर्शिनी को तब लिखे थे जब वे दस साल की थी।*

जन्म : 14 नवंबर 1889
मृत्यु : 27 मई 1964

प्रेमचंद

हिंदी कहानी के सबसे समर्थ रचनाकार है प्रेमचंद। उन्होंने सर्वप्रथम उर्दू में लिखना प्रारंभ किया। हिंदी में उनकी सबसे पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' 1916 में 'सरस्वती' नामक पत्रिका में छपी। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, गोदान। प्रेमचंद ने निबंध, जीवनी एवं बाल-साहित्य की रचना भी की है।

जन्म : 31 जुलाई 1880
मृत्यु : 1936

◆ **आत्मकथा लिखें :**

'दुनिया का पुराना हाल जानने के लिए खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें।'

- संसार-रूपी पुस्तक में आप क्या-क्या पढ़ सकते हैं?
- आपके इलाके की भी एक कहानी होती है। लिखें उसकी आत्मकथा।

◆ **ये वाक्य पढ़ें :**

- इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है।
- हिंदुस्तान दुनिया का छोटा-सा हिस्सा है।

इन बातों को मिलाकर पाठ भाग में कैसे प्रस्तुत किया गया है?

देखें :

'...इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है **और** हिंदुस्तान, **जो** एक बहुत बड़ा देश है, **फिर भी** दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है।'

- ऐसी प्रस्तुति में कौन-सा नया आशय मिलता है?
- इसमें रेखांकित शब्दों की भूमिका पहचानें।

◆ **मिश्रित वाक्य चुनें :**

- **पाठ-भाग से ऐसे मिश्रित वाक्यों को चुनकर लिखें।**
- **उन्हें सरल वाक्यों में विभाजित करें।**
- **योजक शब्दों को सूचीबद्ध करें।**

नेहरूजी के अनुसार संसार एक पुस्तक है। इससे हम प्रकृति का हाल सीख सकते हैं। बारिश के वक्त प्रकृति का हाल कैसा होता है? यह जानने के लिए खुद पढ़ें, आमोद कारखानिस का लेख 'दौड़'।

अतिरिक्त वाचन के लिए

लेख

दौड़

आमोद कारखानिस

मई की कड़ी धूप। सूरज जैसे आग उगल रहा है। पतझड़ ने पहले से कई पेड़ों को सुखा दिया है। उन्हें बे-पत्ती कर दिया है। और मई के तपते सूरज ने पानी के स्रोत भी सुखा दिए हैं। सूखी धरती में दरारें पड़ गई हैं। न पत्तियाँ, न पानी– जंगल जैसे सुनसान हो गया है।

और जून का महीना आता है...

दक्षिण के काले-कंाले बादल उमड़-घुमड़कर आते हैं– बारिश की पहली बूँदें पड़ते ही मिट्टी से सौंधी गंध उठती है! थमी ज़िंदगी जैसे अचानक जाग उठती है– और शुरु हो जाती है, एक दौड़!!

अजब दौड़ है, गजब दौड़ है कि ये ज़िंदगी यारों दौड़ है....

इधर दौड़ है, उधर दौड़ है ये जीना यारों दौड़ है.....

बारिश की बौछारों के साथ ज़मीन के अंदर सोए हज़ारों-हज़ार बीज जाग उठते हैं– नए जीवन की शुरुआत होती है। नए अंकुर पनपते हैं ज़मीन पर इधर-उधर, सभी जगह। पर, प्रकृति की खूबसूरती तो देखिए! इतने सारे बीज पनपना शुरु करते हैं– कुछ एक साथ, कुछ थोड़ा आगे-पीछे। सभी को चाहिए पानी, पोषक तत्व और प्रकाश भी।

यह दौड़ है उनकी समय के साथ।

उनके पास समय बहुत कम है। बीजों में जो खाना जमा है वह खत्म होने के पहले नए पौधों को स्थापित होना है। जड़ें फैलानी हैं जिससे वे ज़मीन से पानी और पोषक पदार्थ ले सकें। पत्तियाँ उगानी हैं। यही पत्तियाँ फिर प्रकाश संश्लेषण से खाना बनाएँगी। यह सब बीजों में जमा सीमित खाद्य पदार्थ के साथ करना है।

अभी तो यह मौसम की शुरुआत है। पानी अभी तक ज़मीन के नीचे गहराई तक रिसा नहीं है। बड़े-बड़े पेड़ जिनकी जड़ें ज़मीन में गहराई तक गई हैं अभी तक जागे नहीं हैं।

आमोद कारखानिस

जंगली जीवन के मशहूर फोटोग्राफर एवं लेखक। प्रमुख रचना 'मेरी डायरी के कुछ पन्ने'।

छोटे पौधों केलिए यही मौका है। बड़े पेड़ पत्तियाँ उगाना शुरु कर देंगे तो ज़मीन तक कम धूप पहुँच पाएगी। पौधों को खाना बनाने केलिए आकाश की ज़रूरत है– उनके पास वक्त कम है।

और संघर्ष है जीने के लिए भी।

पेड़-पौधों में जब इतना कुछ हो रहा हो तो जंतु-जगत इससे अछूता कैसे रहे? कुछ कीड़ों के अंड़े, कोष जो सोए हुए थे, जाग जाते हैं। उठो भाई, बहुत सारे मुलायम स्वादिष्ट पत्ते उपलब्ध हैं। अंडों से लार्वा निकलते हैं। और निकलते ही वे भुक्खड़ों की तरह खाना शुरु कर देते हैं– उनकी भी तो दौड़ है।

इल्ली से वयस्क तक की सभी अवस्थाएँ पूरी करने के लिए कुछ कीड़ों को पानी की, कुछ को इस वक्त फूटी नई पत्तियों की ज़रूरत होती है। थोड़ा ही समय है इन कीड़ों के पास ये सभी अवस्थाएँ पूरी करने के लिए। इन्हें साथी तलाशना है और अंडे देने हैं जो अगले साल इसी प्रक्रिया को आगे ले जाएँगे। हाँ, साथ में खुद को बचाकर भी तो रखना है। छोटी-मुलायम इल्लियाँ किसी भी शिकारी – बहुत सारे पक्षियों, बड़े कीड़ों, छिपकलियों – का जी ललचा सकती हैं।

गर्मियों में जिन पक्षियों ने घोंसला बना लिए थे वहाँ मादा अंडे दे चुकी है। कइयों में बच्चे भी आ चुके हैं। ये छुटके बड़े खाऊ होते हैं। एक तो वे खाते ज़्यादा हैं, दूसरे बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं। उनके माँ-बाप दिन-रात उनके लिए खाना लाने में लगे रहते हैं।

और संघर्ष है जीने के लिए भी।

मादा एक घोंसले में अमूमन 2-3 अंडे देती हैं। हर बच्चे की भरसक कोशिश होती है माता-पिता द्वारा लाए खाने से ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा पाने के लिए– धक्का-मुक्की, एक-दूसरे पर चढ़ बैठना; लड़ना-झगड़ना, चोंच मारना, कमज़ोर को घोंसले से गिरा देना सब होता है यहाँ। जीने का संघर्ष जारी है।

बड़े पेड़ों पर अब नए पत्ते निकलना शुरु हो गए हैं। धीरे-धीरे ज़मीन तक पहुँचनेवाली रोशनी कम होती जाएगी। छोटे पौंधों की खुशहाली के दिन खत्म होने को हैं। पर, कहानी यहाँ खत्म नहीं होती। नए पौधे आते हैं। पौधों पर फूल आते ही कितने सारे कीड़े, मधुमक्खियाँ मंडराने लगती हैं। कहानी आगे बढ़ती रहती है। ज़िंदगी आगे बढ़ती रहती है। नए आयाम, नए खिलाड़ी, नई रचनाओं के साथ– जीवन की विविधता को और समृद्ध बनाते हुए।

बारिश का अनुभव सुहाना होता है। आप को बारिश कैसे महसूस होता है? इसपर एक छोटा-सा संस्मरण लिखें।

मदद लें...

अकाल में सारस

अकाल	-	ക്ഷാമകാലം வறட்சிக் காலம் ಬರಕಾಲ
सारस	-	സാരസ പക്ഷി A species of heran சாரச பறவை ಕೊಕ್ಕರೆ
क्रेंकार	-	സാരസപക്ഷിയുടെ കരച്ചിൽ சாரசபறவையின் அழுகை ಕೊಕ್ಕರೆ ಕೂಗುವುದು
बारज	-	മട്ടുപ്പാവ് balcony மொட்டைமாடி ಮಾಳಿಗೆ
झरना	-	പൊഴിഞ്ഞുവീഴുക சொட்டாக விழுவது ಹನಿ
निगाह	-	നോട്ടം பார்வை ದೃಷ್ಟಿ
पानी की तलाश	-	पानी की खोज
डैने पीटना	-	ചിറകടിക്കുക சிறகடிப்பது ರೆಕ್ಕೆ ಬಡಿಯುವುದು

संसार पुस्तक है

आबाद	-	बसा हुआ
इरादा	-	विचार, इच्छा
कंकड़	-	पत्थर का टुकड़ा
ख़याल	-	ध्यान, सोच-विचार, कल्पना

खुरदरा - പരുപരുത്ത சொரசொரப்பான ದೊರಗು

घरौंदा - കളിവീട് விளையாட்டு வீடு ಮಕ್ಕಳ ಆಟದ ಮನೆ

घाटी - മലയിടുക്ക് மலை இடுக்கு ಪರ್ವತದ ಕಡಿದಾದ ಸ್ಥಾನ

चट्टान - പാറക്കെട്ട് பாறைக்கூட்டம் ಬಂಡೆಗಲ್ಲು

चमकीला - തിളക്കമുള്ള பளபளப்பான ಪ್ರಕಾಶವಾದ

ज़र्रा - अत्यंत छोटा टुकड़ा

टापू - द्वीप

दरिया - नदी

नोकीला - മുനയുള്ള கூர்மையான ಚೂಪಾದ

परी - अप्सरा

पेंदा - तला, वस्तु का निचला भाग

बालू - रेत

बेहद गरम - अत्यंत गरम

रोड़ा - വലിയ ചരൽ பெரிய சரல் ಹರಳುಕಲ್ಲು पत्थर का टुकड़ा

दौड़

कड़ी - कठिन

पतझड़ - शिशिर ऋतु

धरती - भूमि

सुनसान - शून्य

थमी - निश्चल

शुरू	- आरंभ
अजब	- आश्चर्यजनक
बारिश	- वर्षा
खूबसूरती	- सुंदरता
खतम होना	- समाप्त होना
रिसना	- बहुत सूक्ष्म छिद्रों द्वारा नीचे उतरना
वक्त	- समय
अछूता	- अस्पर्श
भुक्खड़	- भूखा
तलाशना	- ढूँढ़ना
मादा	- स्त्री(पक्षी)
खाऊ	- खानेवाला
अमूमन	- लगभग
भरसक	- कठिन
कोशिश	- परिश्रम
रोशनी	- प्रकाश

अधिगम उपलब्धियाँ

- *कविता पढ़कर व्याख्या लिखता है।*
- *आत्मकथा तैयार करता है।*
- *वाक्यों का विश्लेषण करता है और प्रयोग करता है।*

इकाई 5

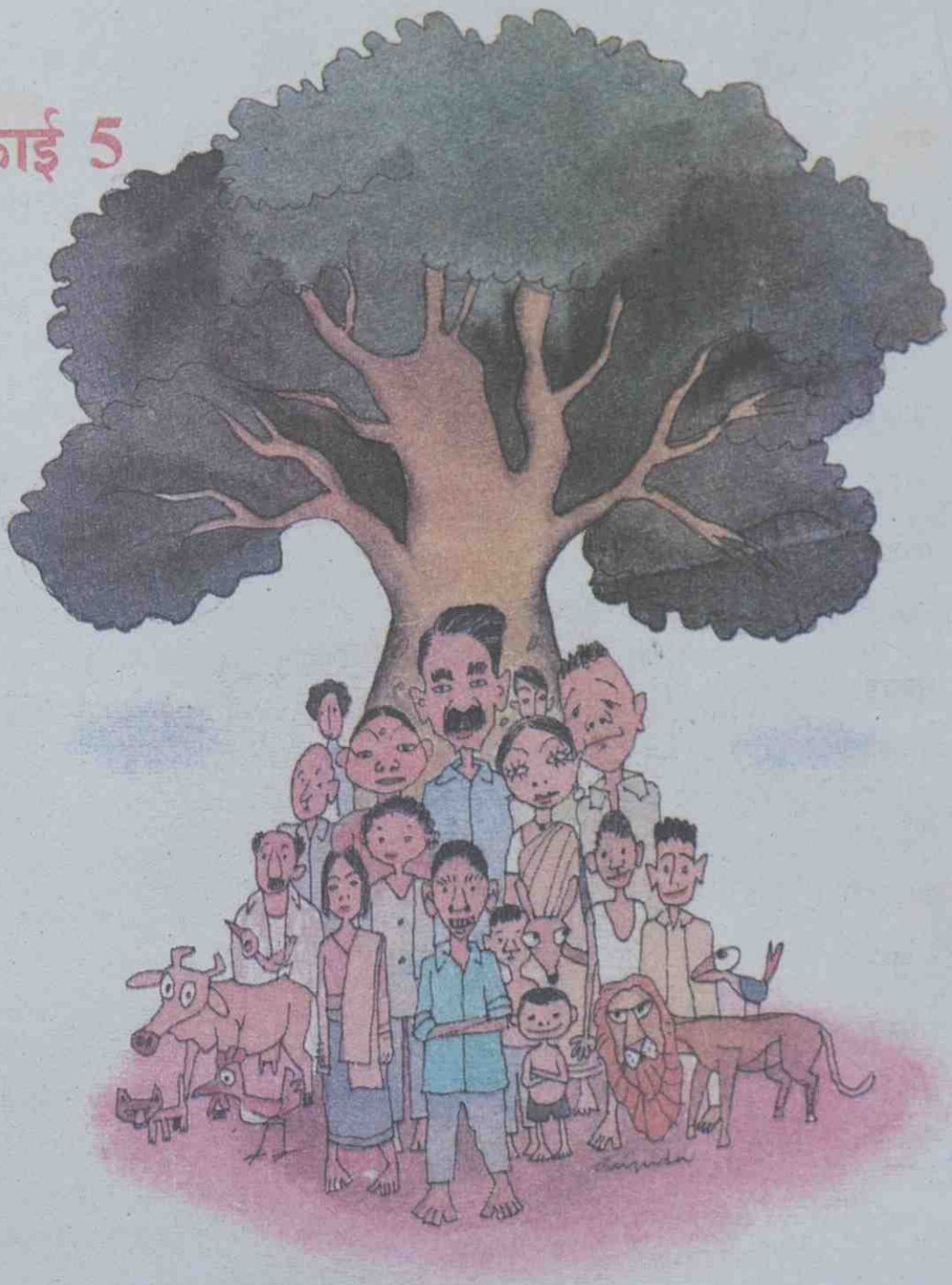

सूखता नहीं
यह प्रेम का वट
तुम्हारा बोया

सूखता नहीं
यह प्रेम का वट
तुम्हारा बोया

• *यहाँ का 'तुम' कौन हो सकता है?*

प्रेमचंद घर में

शिवरानी देवी

उन दिनों मैं अकेली महोबे में रहती थी। वे जब दौरे पर रहते तो मेरे साथ ही सारा समय काटते और अपनी रचनाएँ सुनाते। अंग्रेज़ी अखबार पढ़ते तो उसका अनुवाद मुझे सुनाते। उनकी कहानियों को सुनते-सुनते मेरी भी रुचि साहित्य की ओर हुई। जब वे घर पर होते, तब मैं कुछ पढ़ने के लिए उनसे आग्रह करती। सुबह का समय लिखने के लिए वे नियत रखते। दौरे पर भी वे सुबह ही लिखते। बाद को मुआइना करने जाते। इसी तरह मुझे उनके साहित्यिक जीवन के साथ सहयोग करने का अवसर मिलता। जब वे दौरे पर होते, तब मैं दिन भर किताबें पढ़ती रहती। इस तरह साहित्य में मेरा प्रवेश हुआ।

उनके घर रहने पर मुझे पढ़ने की आवश्यकता न प्रतीत होती। मुझे भी इच्छा होती कि मैं कहानी लिखूँ। हालाँकि मेरा ज्ञान नाममात्र को भी न था, पर मैं इसी कोशिश में रहती कि किसी तरह मैं कोई कहानी लिखूँ। उनकी तरह तो क्या लिखती। मैं लिख-लिखकर फाड़ देती। और उन्हें दिखाती भी नहीं थी। हाँ, जब उनपर कोई आलोचना निकलती तो मुझे उसे सुनाते। उनकी अच्छी आलोचना प्रिय लगती। काफ़ी देर तक यह खुशी रहती। मुझे यह जानकार गर्व होता कि मेरे पति पर यह आलोचना निकली है। जब कभी उनकी कोई कड़ी आलोचना निकलती, तब भी वे उसे बड़े चाव से पढ़ते। मुझे तो बहुत बुरा लगता।

प्रेमचंद की कोई कड़ी आलोचना निकलती, तब भी वे उसे बड़े चाव से पढ़ते। यहाँ प्रेमचंद का कौन-सा मनोभाव स्पष्ट होता है?

मैं इसी तरह कहानियाँ लिखती और फाड़कर फेंक देती। बाद में गृहस्थी में पड़कर कुछ दिनों के लिए मेरा लिखना छूट गया। हाँ, कभी कोई भाव मन में आता तो उनसे कहती, इस पर आप कोई कहानी लिख लें। वे ज़रूर उस पर कहानी लिखते।

कई वर्षों के बाद, 1913 के लगभग, उन्होंने हिंदी में कहानियाँ लिखना शुरू किया। किसी कहानी का अनुवाद हिंदी में करते, किसीका

उर्दू में। मेरी पहली 'साहस' नाम की कहानी 'चाँद' में छपी। मैंने वह कहानी उन्हें नहीं दिखाई। 'चाँद' में आपने देखा। ऊपर आकर मुझसे बोले- "अच्छा, अब आप भी कहानी-लेखिका बन गईं?" बोले- "यह कहानी आफिस में मैंने देखी। आफिसवाले पढ़-पढ़कर खूब हँसते रहे। कइयों ने मुझपर संदेह किया।"

'आफिसवाले पढ़-पढ़कर खूब हँसते रहे। कइयों ने मुझपर संदेह किया।' –यहाँ लोगों का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

तब से जो कुछ मैं लिखती, उन्हें दिखा देती। हाँ, यह खयाल मुझे ज़रूर रहता कि कहीं मेरी कहानी उनके अनुकरण पर तो नहीं जा रही हो। क्योंकि मैं लोकापवाद को डरती थी।

एक बार गोरखपुर में डॉ. एनी बेसेंट की लिखी हुई एक किताब आप लाए। मैंने वह किताब पढ़ने के लिए माँगी। आप बोले- "तुम्हारी समझ में नहीं आएगी।" मैं बोली- "क्यों नहीं आएगी? मुझे दीजिए तो सही।" उसे मैं छः महीने तक पढ़ती रही। रामायण की तरह उसका पाठ करती रही। उसके एक-एक शब्द को मुझे ध्यान में चढ़ा लेना था। क्योंकि उन्होंने कहा था कि यह तुम्हारी समझ में नहीं आएगी। मैं उस किताब को खतम कर चुकी तो उनके हाथ में देते हुए बोली- "अच्छा, आप इसके बारे में मुझसे पूछिए। मैं इसे पूरा पढ़ गई।" आप हँसते हुए बोले- "अच्छा!

मैं बोली- "आपको बहुत काम रहते भी तो हैं। बेकार आदमी जिस किसी चीज़ के पीछे पड़ेगा, वह पूरा कर देगा।"

'बेकार आदमी जिस किसी चीज़ के पीछे पड़ेगा, वह पूरा कर देगा।' –में निहित व्यंग्य क्या है?

मेरी कहानियों का अनुवाद अगर किसी और भाषा में होता तो आपको बड़ी प्रसन्नता होती। हाँ, उस समय हम दोनों को बुरा लगता, जब

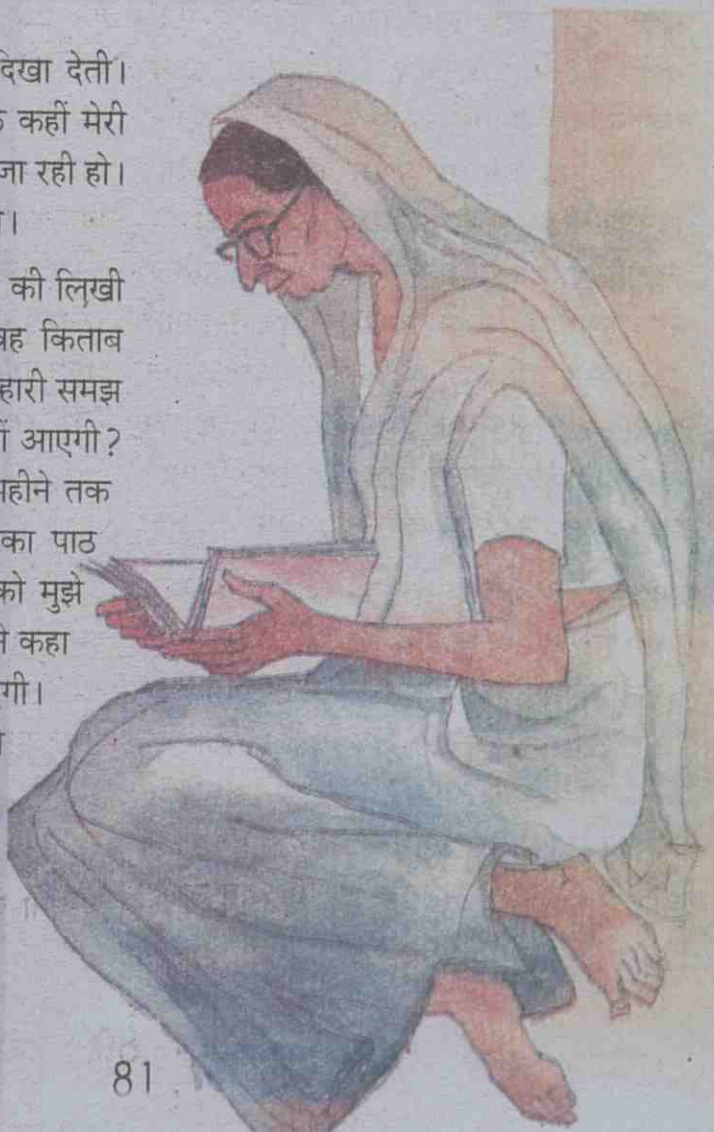

दोनों से कहानियाँ माँगी जातीं। या जब कभी रात को प्लाट ढूँढ़ने के कारण मुझे नींद न आती, तब वे कहते- "तुमने क्या अपने लिए एक बला मोल ले ली? आराम से रहती थीं, अब फिजूल की एक झंझट खरीद ली।" मैं कहती- "आपने नहीं बला मोल ले ली! मैं तो कभी-कभी लिखती हूँ। आपने तो अपना पेशा बना रखा है।"

आप बोलते- "तो उसकी नकल तुम क्यों करने लगीं?"

मैं कहती- "हमारी इच्छा! मैं भी मजबूर हूँ। आदमी अपने भावों को कहाँ रखे?"

किस्मत का खेल कभी नहीं जाना जा सकता। बात यह है कि वे होते तो आज और बात होती। लिखना-पढ़ना तो उनका काम ही था। मैं यह लिख नहीं रही हूँ, बल्कि शांति पाने का एक बहाना ढूँढ़ रखा है।

लेखन-कार्य, कैसे शांति पाने का बहाना हो सकता है?

◇

◇ **पत्र लिखें।**

- **प्रेमचंद के बारे में अपने मित्र के नाम पत्र लिखें।**

◇ **पोस्टर तैयार करें।**

- **'प्रेमचंद घर में' नामक किताब का पुनःप्रकाशन होनेवाला है। इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।**

अनुबद्ध कार्य

◇ **मातृभाषा की किसी एक लघुकथा का हिंदी में अनुवाद करें।**

शिवरानी देवी

आप हिंदी के मशहूर कथाकार प्रेमचंद जी की पत्नी हैं। 'प्रेमचंद घर में' नामक किताब में आपने अपने घरेलू जीवन के छोटे-छोटे संस्मरण दर्ज किए हैं। यह पहली बार 1944 में छपी थी। प्रस्तुत प्रसंग से वास्तविक जीवन की परतों को समझा जा सकता है।

राग गौरी

पद

सूरदास

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीनो तोहि जसुमति कब जायो।।
कहा कहौं एहि रिसि के मारे खेलन हौं नहिं जातु।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता को है तुमरो तातु।।
गोरे नंद जसोदा गोरी तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बलवीर।।
तू मोही को मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझै।।
सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई जनमत ही को धूत।
'सूर' स्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत।।

- समानार्थी शब्द कविता में ढूँढ़ें।

खड़ीबोली	व्रज
मुझे	
मुझसे	
तुझे	
क्रोध	
श्याम	
देखकर	

- कविता में कृष्ण अपनी माँ से कुछ शिकायतें कर रहा है। कविता के प्रसंग में यशोदा और बालक कृष्ण के बीच का वार्तालाप लिखें।

सूरदास

हिंदी के कृष्णकाव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं सूरदास। उनकी प्रामाणिक रचनाएँ हैं- सूरसागर, सूर-सारावली तथा साहित्य-लहरी।

अनमोल रिश्तों पर एक और कविता है– 'ओ मेरे पिता'। एकांत श्रीवास्तव की यह कविता पढ़ें।

अतिरिक्त वाचन के लिए

कविता

ओ मेरे पिता

एकांत श्रीवास्तव

मायावी सरोवर की तरह
अदृश्य हो गए पिता
रह गए हम
पानी की खोज में भटकते पक्षी

ओ मेरे आकाश पिता
टूट गए हम
तुम्हारी नीलिमा में टँके
झिलमिल तारे

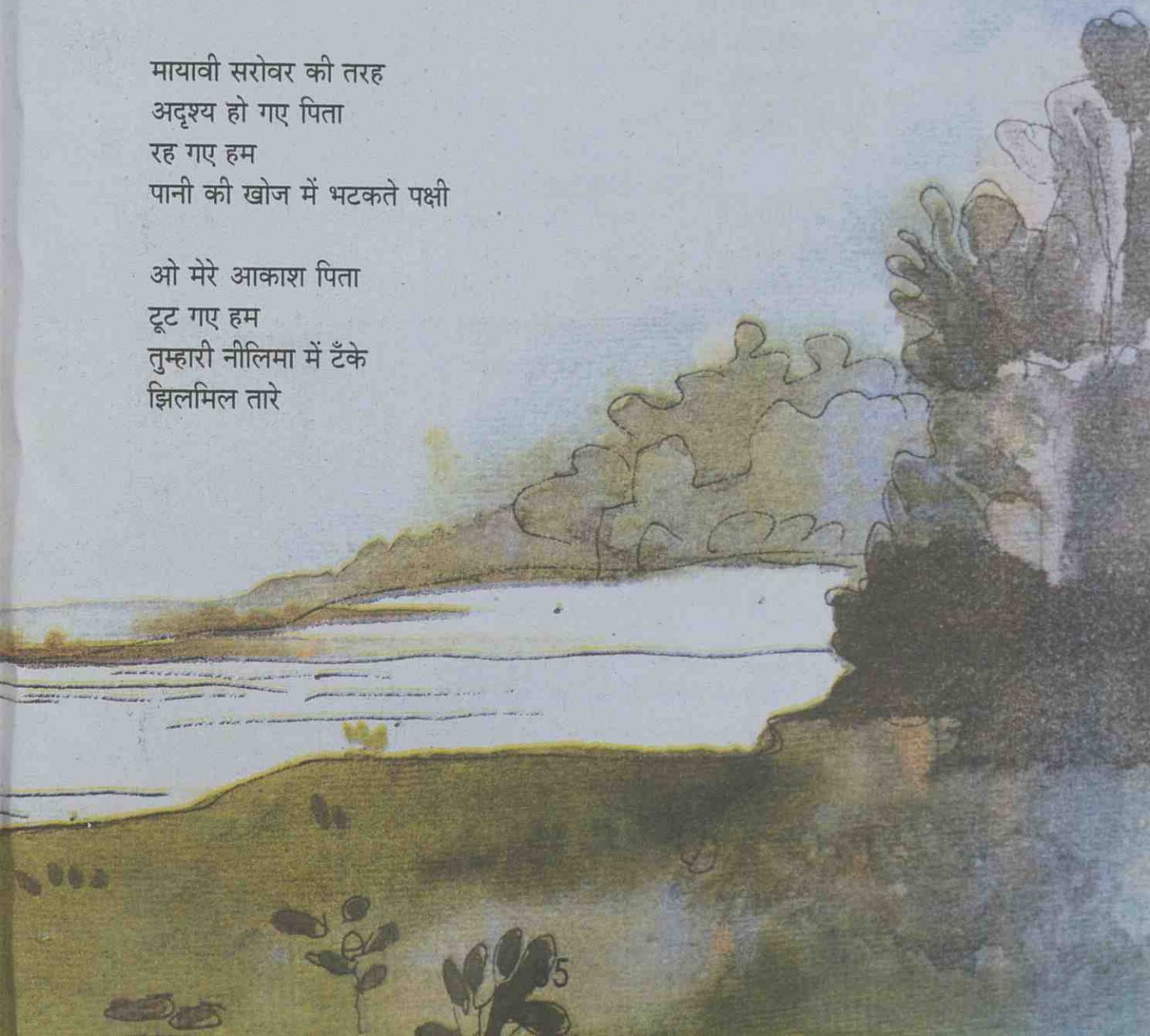

ओ मेरे जंगल पिता
सूख गए हम
तुम्हारी हरियाली में बहते
कलकल झरने

ओ मेरे काल पिता
बीत गए तुम
तुम्हारे कैलेंडर की
उदास तारीखें

हम झेलेंगे दुख
पोंछेंगे आँसू
और तुम्हारे रास्ते पर चलकर
बनेंगे सरोवर, आकाश, जंगल और काल
ताकि हरी हो घर की एक-एक डाल।

◆ **कविता का आलाप करें।**

एकांत श्रीवास्तव

जन्म : 08 फरवरी 1964 को छत्तीसगढ़ के छुरा में। प्रमुख रचनाएँ : अन्न हैं मेरे शब्द, मिट्टी से कहूँगा धन्यवाद, बीज से फूल तक। पुरस्कार : शरद बिल्लौरे पुरस्कार, केदार सम्मान, दुष्यंतकुमार पुरस्कार आदि...

मदद लें...

प्रेमचंद घर में

आलोचना	-	നിരൂപണം criticism விமர்சனம்
किस्मत	-	വിധി விதி
चाव	-	രുചി interest ஆர்வம்
दौरे	-	യാത്ര பயணம் ಯಾತ್ರೆ
ध्यान में चढ़ा लेना	-	മനസിലാക്കുക கவனத்தில் கொண்டு வருதல் ಗಮನಕ್ಕೆ ತರು
फाड़ना	-	കീറുക கிழிப்பது ಹರಿಯು
फेंकना	-	എറിയുക எறிதல் ಬಿಸಾಡು
बहाना	-	നാട്യം நடனம் ಅಭಿನಯ
मज़बूर	-	विवश
मुआइना	-	നിരീക്ഷണം/പരിശോധന உற்று நோக்குதல் / பரிசோதித்தல்
दौरा	-	യാത്ര பயணம்

राग गौरी

एहि	-	इस
कत	-	क्यों
कबहुँ	-	कब
कहा कहौं	-	कहते कहते
खिझायो	-	खिजलाना, चिढ़ाना ദേഷ്യം പിടിപ്പിക്കുന്നു കോപം கொள்ளவைப்பது ಯು ಕೋಪಗೊಳಿಸು
खीझै	-	ശാഠ്യം പിടിപ്പിക്കുക - பிடிவாதம் பிடிப்பது ಯು ಹಟ ಹಿಡಿಯು
गोरे	-	सफ़ेद
चवाई	-	निंदक, दूसरों की बुराई फैलानेवाले
चुटकी	-	तर्जनी और बीच की उँगली को मिलाने से बनी हुई मुद्रा விரல்

ഞൊടിക്കുക விரல் நொடித்தல்

जनमत	-	जन्म से ही
जायो	-	जन्म दिया
तातु	-	पिता
तुमरो	-	तुमरा, तुम्हारा
तोहि	-	तुझे
दाउहि	-	दाऊ, बड़ा भाई, बलराम
धूत	-	बदमाश വഷളൻ முட்டாள் ಯು ಕೇಡಿ
नंद	-	नंदगोप
पुनि-पुनि	-	बार बार
पूत	-	पुत्र
मैया	-	माँ
मोल को लीनो	-	मूल्य देकर ले लिया
मोसों	-	मुझसे
मोहि	-	मुझे
रिसि	-	रिस, रोष, नाराज़गी
रीझें	-	प्रसन्न होना, आकृष्ट होना
लखि	-	देखकर
हँसत	-	हँसना
हौं	-	मैं

ओ मेरे पिता

खोज	-	तलाश
झेलना	-	सहना
सरोवर	-	तालाब

अधिगम उपलब्धियाँ

- *संस्मरण पढ़कर पत्र लिखता है।*
- *पोस्टर तैयार करता है।*
- *मातृभाषा से हिंदी में अनुवाद करता है।*
- *वार्तालाप तैयार करता है।*
- *कविता-पाठ करता है।*

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग है- 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं-

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक
- उत्तरजीविता का एवं सर्वांगीन विकास का हक
- धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता से बढ़कर आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक
- मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक
- भागीदारी का हक
- बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक
- बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक
- अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक
- उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक
- मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक
- खेलने तथा पढ़ने का हक
- सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक

कुछ दायित्व

- स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।
- स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।
- अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।
- जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं से बढ़कर दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।

Contact Address:

Kerala State Commission for Protection of Child Rights
'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction
Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone : 0471 - 2326603
Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in
Website : www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400

Kerala Police Helpline - 0471 - 3243000/44000/45000

Online R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in

State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Vidyabhavan, Poojappura, Thiruvananthapuram
Kerala-695 012. Website www.scert.kerala.gov.in
e-mail scertkerala@gmail.com

Printed by the Chairman & Managing Director
Kerala Books and Publications Society
(An Undertaking of the Government of Kerala)
Kakkanad, Kochi-682 030